सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 10 ● अंक: 123 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 6 जून, 2024
मूल्य ₹ 3/-

जो हमारी निंदा करता है, उसे अपने अधिकाधिक पास ही रखना चाहिए। वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमियां बता कर हमारे स्वभाव को साफ़ करता है।

-कबीर दास

टी-20 वर्ल्डकप में भारत का जीत... 7 | जनता ने बता दिया एक अकेला... 3 | पिता मुलायम की विरासत को... 2

अबकी बार विपक्षी नकेल वाली होगी मोदी की सरकार

अन्य दल भी चाहते हैं उचित सम्मान

इंडिया गठबंधन ने कहा- सकारात्मक विपक्ष की भूमिका में रहेंगे

» राजग के पीएम होंगे मोदी 9 को ले सकते हैं शपथ

» नीतीश व नायडू ने बनाया दबाव, की कई बड़ी मांग

» नीतीश कुमार अभी दिल्ली में डटे रहेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संभवत: 8 या 9 जून को भाजपा व राजग के नेता नरेन्द्र मोदी देश के नए प्रधानमंत्री का शपथ ले सकते हैं। राजग के दो प्रमुख सहयोगी दल जदयू व टीडीपी ने समर्थन देने का पत्र दे दिया है। उधर सूत्रों द्वारा खबर आ रही है कि दोनों दलों ने कई मंत्री पद व अहम मांगे रखीं है। ऐसा माना जा रहा है कि बीजेपी उनकी मांगों को मानने पर विचार करेगी। इसके लिए शीर्ष नेताओं की कमेटी बना दी गई है। वो सहयोगियों से चर्चा कर रहें है। उधर इंडिया गठबंधन ने फिलहान सकारात्म विपक्ष की भूमिका में रहने का फैसला किया है।

सियासी गलियारें में यह चर्चा चल रही है इस बार मजबूत विपक्ष के दबाव में चलेगी नई सरकार। इससे पहले प्रधानमंत्री के पद से बुधवार को नरेंद्र मोदी इस्तीफा दे चुके हैं। नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलकर उनको अपना इस्तीफा सौंपा है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी प्रधानमंत्री और मंत्री परिषद के तौर पर उनका इसी का स्वीकार कर चुकी हैं। वहीं उन्होंने नई सरकार के गठन होने तक प्रधानमंत्री से गुजारिश की है कि वह कार्यवाहक प्रधानमंत्री के तौर पर अपने पद पर बने रहे। विपक्षी नेतृत्व इंडिया ब्लॉक ने भी बेहतरीन प्रदर्शन किया है।

कैबिनेट में शामिल होने या नही होने का फैसला लेने से पहले तक नीतीश कुमार दिल्ली में रहने वाले है। नीतीश कुमार अगर सत्ता पक्ष को समर्थन देते है तो वो कैबिनेट में चार मंत्री पद भी मांग सकते है। 8 जून को होने वाले शपथ ग्रहण समारोह से पहले गठबंधन की पार्टियों जैसे टीडीपी, जेडीयू और जेडीएस ने समर्थन देने की एवज में अपनी मांग भी सामने रख दी है। जेडीएस ने कृषि मंत्रालय मांगा है जबकि टीडीपी स्वास्थ्य, परिवहन और शिक्षा जैसे मंत्रालय मांग सकती है। सूत्रों की माने तो जेपी नड्डा के घर पर अहम बैठक होने वाली है। इस बैठक में राजनाथ सिंह, अमित शाह जैसे बड़े नेता शामिल होंगे।

शपथ ग्रहण निमंत्रण पड़ोसी देशों के प्रधानमंत्रियों ने स्वीकारा

शपथ ग्रहण समारोह को भव्य बनाने की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। कई विदेशी मेहमानों को भी आमंत्रित किया गया है। बांग्लादेश और नेपाल के प्रधानमंत्रियों ने इस बात की पुष्टि भी कर दी है कि वह शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे। एक दिन पहले जानकारी आई थी कि शपथ ग्रहण समारोह में बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, नेपाल और मॉरीशस के शीर्ष नेताओं के शामिल होने की संभावना है। औपचारिक निमंत्रण गुरुवार को भेजे जाने की तैयारी है। सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना और नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल ने पुष्टि की है कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे। इससे पहले हसीना और उनके नेपाल समकक्ष दहल ने 18वीं लोकसभा चुनावों में एनडीए की जीत के लिए नरेंद्र मोदी को शुभकामनाएं दी थीं।

मोदी नहीं चला सकते गठबंधन सरकार : राउत

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे आने के एक दिन बाद एनडीए और इंडिया दोनों पक्षों में सौहार्दपूर्ण बातचीत हुई। उद्धव बालासाहेब ठाकरे सेना के नेता संजय राउत ने कहा कि गठबंधन सरकार चलाना नरेंद्र मोदी की ताकत नहीं है। संजय राउत ने कहा कि बीजेपी अब गठबंधन बनाने की कोशिश कर रही है लेकिन वह अपने ही रवैये में मोदी की सरकार, मोदी की गारंटी की बात करते रहे। एनडीए के हिस्से के रूप में चुनाव लड़ने वाले नीतीश कुमार और एन चंद्रबाबू नायडू के गठबंधन के साथ रहने की संभावना है, लेकिन उन्होंने नई एनडीए सरकार से अपनी मांगें रखी हैं।

» बोले- नीतीश कुमार नायडू सबके दोस्त

चंद्रबाबू नायडू 12 को ले सकते हैं सीएम पद की शपथ

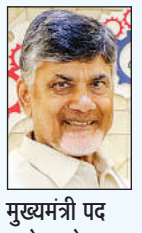

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ तेलुगु देशम पार्टी के अध्यक्ष चंद्रबाबू नायडू को लेनी है। संभावित तौर पर इस बार वो 12 जून को मुख्यमंत्री पद की शपथ ले सकते है। इससे पहले जानकारी आई थी कि शपथ ग्रहण समारोह नौ जून को आयोजित होगा, मगर अब उसे 12 जून के लिए टाल दिया गया है। बता दें कि चंद्रबाबू नायडू के शपथ ग्रहण को इससे डाला गया है क्योंकि 8 जून को नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने वाले हैं।

जनमत को नकारने की हर संभव कोशिश करेंगे मोदी : खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष के आवास पर इंडिया गठबंधन के नेताओं ने बैठक कर लोकसभा चुनाव के परिणाम और आगामी रणनीति पर चर्चा हुई। मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि हम एक साथ लड़े, तालमेल से लड़े और पूरी ताक़त से लड़े। आप सबको बधाई! 18वीं लोक सभा चुनाव का जनमत सीधे तौर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ़ है। चुनाव उनके नाम और चेहरे पर लड़ा गया था और जनता ने भाजपा को बहुमत ना देकर उनके नेतृत्व के प्रति साफ संदेश दिया है। व्यक्तिगत रूप से मोदीजी के लिये यह ना सिर्फ़ राजनैतिक शिकस्त है, बल्कि नैतिक हार भी है। परन्तु हम सब उनकी आदतों से वाकिफहैं। वो इस जनमत को नकारने की हर संभव कोशिश करेंगे। हम यहाँ से यह भी संदेश देते हैं कि इंडिया गठबंधन उन सभी राजनीतिक दलों का स्वागत करता है जो भारत के संविधान के प्रस्तावना में अटूट विश्वास रखते है और इसके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक न्याय के उद्देश्यों से प्रतिबद्ध है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बीजेपी के खिलाफ एकजुट होकर लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए इंडिया ब्लॉक के सभी सहयोगियों को धन्यवाद दिया और कहा कि विपक्षी गठबंधन उन सभी पार्टियों का स्वागत करता है जो संविधान की प्रस्तावना में निहित मूल्यों के प्रति मौलिक प्रतिबद्धता साझा करते हैं।

पिता मुलायम की विरासत को आगे ले जाएंगे अखिलेश

» यूपी छोड़ केंद्र की राजनीति करेंगे सपा प्रमुख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अब अपने पिता मुलायम सिंह यादव की विरासत को आगे बढ़ाएंगे। सूत्रों से खबर आ रही है कि यूपी की विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष का पद छोड़ेंगे। सपा अब केंद्र की राजनीति में दखल बढ़ाएगी। यहां नेता प्रतिपक्ष का पद उनके चाचा व विधायक शिवपाल यादव या पीडीए के तीन विधायकों रामअचल राजभर, इंद्रजीत सरोज और कमाल अख्तर में से किसी एक को मिल सकता है। अखिलेश यादव के नेतृत्व में सपा देश की तीसरी बड़ी ताकत बन गई है।

नियमानुसार, इनमें से किसी एक सीट पर ही रहा जा सकता है। अखिलेश के नजदीकी सूत्रों के मुताबिक, वे अब राष्ट्रीय राजनीति को तरजीह देंगे। यानी, विधानसभा से इस्तीफा देकर लोकसभा सीट अपने पास रखेंगे। जाहिर है कि उस स्थिति में नेता प्रतिपक्ष नया चुनना होगा। सपा की रणनीति यह पद पीडीए (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक) के ही किसी विधायक को देने की है। ताकि, जिस रणकौशल के वजह से वो तीसरे नंबर की पार्टी बनी है, उसे और पुख्ता किया जा सके। साथ ही मतदाताओं को संदेश भी दिया जा सके।

दूसरे नेताओं का बढ़ेगा कद

इस लिहाज से अकबरपुर (अम्बेडकरनगर) से सपा विधायक रामअचल राजभर, मंझनपुर (कौशाम्बी) से इंद्रजीत सरोज और कांठ (मुरादाबाद) से सपा विधायक कमाल अख्तर का नाम आगे चल रहा है। ये तीनों नेता यूपी सरकार में कैबिनेट मंत्री भी रह चुके हैं।

सपा ने 33.59 फीसदी वोट हासिल किया

लोकसभा चुनाव में 33.59 फीसदी वोट हासिल करने के साथ ही उसे 37 सीटें मिली हैं। अखिलेश यादव खुद कन्नौज से भारी मतों के अंतर से जीतकर लोकसभा पहुंचे हैं। वर्तमान में वे मैनपुरी की करहल सीट से विधायक हैं। साथ ही विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी भी उनके पास है।

जीत से यूपी में दिखा राहुल का दम

गांधी परिवार के गढ़ में सोनिया ने राहुल को जिस उम्मीद के साथ मैदान में उतारा उसपर राहुल खरे भी उतरे। मां के सपने को साकार करते हुए इतिहास रच दिया। आम चुनाव में न केवल मां की विरासत को बचाया, बल्कि प्रदेश में 3.90 लाख से अधिक वोटों के अंतर से जीतकर दूसरे स्थान पर पहुंच गए। पहले स्थान पर गौतमबुद्ध नगर के भाजपा प्रत्याशी डॉ. महेश शर्मा रहे, जिन्हें 5.59 लाख से अधिक वोट मिले। सोनिया गांधी के राज्यसभा में जाने के बाद एक बार ऐसा लगा कि रायबरेली से गांधी परिवार का रिश्ता खत्म होने वाला है। नामांकनपत्र जमा करने से एक दिन पहले तक स्थिति साफ नहीं थी। आखिरी दिन तीन मई को राहुल गांधी की घोषणा के साथ ही सोनिया गांधी ने पूरे कुनबे के साथ कलेक्ट्रेट पहुंचकर नामांकन पत्र भरवाया। राहुल के नामांकन के साथ ही कांग्रेसियों में उमड़ा जोश रिकॉर्ड मतों के अंतर से राहुल को जिताने के बाद ही शांत हुआ। मां की सीट पर पहली बार उतरे राहुल को जिले के हर तबके ने मत दिया। 94 प्रतिशत बूथों पर राहुल को जिताकर जिले के लोगों ने संबंधों को पहले जैसा रखने का प्रयास किया है।

कई जगह कम मार्जिन से हारे : तेजस्वी यादव

» बोले- जनता ने तानाशाही को दी करारी चोट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 का परिणाम आ गया है। बिहार में महागठबंधन को नौ सीटें मिलीं। इसमें से राष्ट्रीय जनता दल को चार, भाकपा (माले) को दो और कांग्रेस तीन सीटों पर जीत मिली। महागठबंधन के नेता लालू प्रसाद यादव के बेटे तेजस्वी यादव ने ही इस बार बिहार की कमान संभाली थी। करीब एक महीने वह व्हीलचेयर पर ही सभाएं करने के लिए जाते रहे। अपनी बात बताते रहे। लोगों को समझाते रहे। और, आज यह परिणाम सामने है। तेजस्वी यादव ने इस जीत के साथ खुद को चिढ़ाने की वजह भी खत्म कर दी है।

चुनाव परिणाम आने के बाद तेजस्वी यादव ने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिा। कहा कि बिहार और देश की जनता को मैं धन्यवाद दे रहा हूं। आपने प्रेम, सौहार्द एवं सामाजिक आर्थिक न्याय की राजनीति के पक्ष में गोलबंदी करते हुए अहंकार और तानाशाही की राजनीति को एक बड़ा झटका दिया है। आज के परिणाम देश में सुखद अनुभूति की एक लहर लेकर आएं हैं। पूरे देश ने मिलकर भारत के वास्तविक मिजाज़, लोकतंत्र, संविधान और आरक्षण की रक्षा की है। तमाम जांच एजेंसियों, पक्षपाती आयोग, गोदी मीडिया, सरकारी मशीनरी, असीमित संसाधनों एवं साजिशों के साथ चुनाव लड़ रहे खुद को विश्व विजेता मानें लेकिन सच यही है कि देश और बिहार की जनता ने इंडी गठबंधन के साथ मिलकर तानाशाही, झूठ, जुमलों और प्रपंच को करारी हार दी है।

सत्ता और सरोकार परिवर्तन में सकारात्मक लक्षण दिखेंगे

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि मैं विशेष रूप से एक-एक बिहारवासी को हृदय से धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने प्रचंड गर्मी, झूठे प्रोपेगंडा और विभिन्न साजिशों का सामना करते हुए हमें अपना भरपूर प्रेम और अपार समर्थन दिया। देश और बिहार ने यहां से एक नए रास्ते की रचना की है जिसकी नींव में रोज़गार, पढ़ाई, सिंचाई, दवाई और कमाई के मुद्दे हैं, बंटवारे, घृणा, भेदभाव और तानाशाही की सोच नहीं। आने वाले दिनों में सत्ता और सरोकार परिवर्तन में सकारात्मक लक्षण दिखेंगे। हम बिहार में 7-8 सीट कम मार्जिन से हारे हैं लेकिन हमने बहुजन पिछड़े और प्रगतिशील धारा की एक बड़ी नींव रख दी है। देखते रहिए अभी और कुछ बेहतर देखने को मिलेगा। अंत में तेजस्वी ने लिखा कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपकी हर अपेक्षा पर खरा उतरूंगा। आपके रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए पूर्ण मनोयोग से काम करता रहूंगा।

अमेठी सीट मेरे लिए अमानत : किशोरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेठी से कांग्रेस सांसद किशोरी लाल शर्मा दिल्ली पहुंचे। जहां उन्होंने 10 जनपथ पर गांधी परिवार के साथ मुलाकात की। केएल शर्मा ने कहा कि उनके लिए यह निर्वाचन क्षेत्र गांधी परिवार की अमानत की तरह है। वह सुनिश्चित करेंगे कि अमानत में खयानत न हो। अमेठी सीट से शर्मा ने भाजपा नेता स्मृति ईरानी को 1.67 लाख से अधिक मतों के अंतर से हराकर एक बड़े नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

» गांधी परिवार से मिले अमेठी सांसद

2019 के लोकसभा चुनाव में अमेठी से राहुल गांधी हार गए थे और स्मृति ईरानी जीती थीं। मीडिया से बातचीत में अमेठी सांसद किशोरी लाल शर्मा ने कहा कि राजनीति में बदला नहीं लिया जाता है। यह खेल भावना की तरह है। एक को जीतना होता है और दूसरे को हारना ही होता है। हम चीजों को बदला लेने के संदर्भ में नहीं देखते हैं। भाजपा नेता स्मृति ईरानी के बयान कि जोश अब भी हाई है... । इस पर किशोरी लाल ने कहा कि चुनाव में एक को जीतना था एक को हारना था ऐसे में कोई इस तरह की बात करता है तो ठीक है। इंडिया गठबंधन की सरकार बनाने पर उन्होंने कहा कि ये घटक दल तय करेंगे। बतौर सांसद जो मेरा काम है मैं करता रहूंगा।

जनता की जीत : केएल

अमेठी से कांग्रेस सांसद किशोरी लाल शर्मा ने अपनी जीत को जनता की जीत करार दिया है। मीडिया से बातचीत में कहा कि हम भाजपा के घोषणा पत्र के वादों को लेकर जनता के बीच गए। हमने जनता को भाजपा के वादे जैसे दो करोड़ नौकरियां देंगे, किसानों की आय दोगुना कर देंगे की याद दिलाई और महंगाई व बेरोजगारी जैसे मुद्दों को लेकर जनता के बीच गए। जनता ने हम पर भरोसा किया।

बामुलाहिजा

कार्टून : हसन जैदी

राहुल को मेहनत का मिला लाभ : विजयवर्गीय

बोले- यूपी के गांव-गांव गए, जनादेश स्वीकार करना चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंदौर। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद नेताओं के बयानों का दौर जारी है। मप्र के नगरीय प्रशासन मंत्री और भाजपा के कद्दावर नेता कैलाश विजयवर्गीय ने कहा है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बहुत मेहनत की जिसका उन्हें फल मिला।

विजयवर्गीय ने कहा कि हम सभी को जनता का जनादेश स्वीकार करना चाहिए। राहुल जी ने बहुत मेहनत की है। बेचारे पैदल चले, गांव गांव दौड़ लगाई, जिम गए। हमारा मानना है कि विपक्ष भी मजबूत होना चाहिए। बयानों के लिए चर्चा में रहते हैं विजयवर्गीय इंदौर के भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय अपने बयानों के लिए हमेशा चर्चा में रहते हैं। कुछ समय पहले कैलाश विजयवर्गीय ने कहा था कि आजकल लड़कियां इतने गंदे कपड़े पहनकर निकलती हैं। हम महिलाओं को हम देवियां कहते हैं, लेकिन उनमें देवी का स्वरूप ही नहीं दिखता है। इससे पहले उन्होंने कहा था कि कांग्रेस बीजेपी को हरा नहीं सकती लेकिन अगर हमने अपनी गलतियों को ठीक नहीं किया तो बीजेपी अपनी ही हार का मुख्य कारण बन सकती है।

उप्र की हम समीक्षा करेंगे

वहीं इंडिया गठबंधन को उप्र में मिले समर्थन को लेकर कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि इस पर हम समीक्षा करेंगे। मध्यप्रदेश में क्लीन स्वीप को लेकर उन्होंने कहा कि हम सभी ने मेहनत की है। छिंदवाड़ा कलस्टर का मुझे प्रभार दिया था, जिस पर कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम किया।

कांगड़ा के लिए हमेशा रहेगी प्राथमिकता : आनंद शर्मा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

धर्मशाला। पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांगड़ा-चंबा लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी रहे आनंद शर्मा ने कहा कि इस संसदीय सीट से चुनाव लड़ना एक विशेष अनुभव रहा। यह सौभाग्य रहा कि कांग्रेस नेतृत्व और संगठन के साथियों ने सामूहिक रूप से मुझ पर विश्वास जताते हुए यह अवसर प्रदान किया।

यह अनुभव विशेष रहा, यहां की जनता विशेषकर महिलाएं, माताएं, बहनें और नौजवान युवा साथियों ने बहुत स्नेह और सम्मान दिया। लोगों के उत्साह को देखकर मेरी भी प्रेरणा बनी रही। मैं यहां की जनता का सदैव कृतज्ञ रहूंगा और अपने संगठन के तमाम साथी, जिसमें विधायक, जिला और ब्लॉक कमेटियों, अग्रणी संगठनों के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर मेहनत की और लग्न से काम किया। मेरी प्रतिबद्धताएं और प्राथमिकताएं इस लोकसभा क्षेत्र के लिए सदैव अटूट रहेंगी। लोगों से बात कर पूरे चुनाव क्षेत्र में जाकर यहां की क्षमता और यहां की अपेक्षाओं को समझ सका। भविष्य में भी मेरा सहयोग इस चुनाव क्षेत्र की जनता और संगठन के लोगों को मिलता रहेगा।

जनता ने बता दिया एक अकेला सब पर भारी नहीं

तानाशाही पर भारी पड़ा लोकतंत्र

» भाजपा की नहीं मोदी की हार, सहयोगियों की उपेक्षा पड़ी महंगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकतंत्र के महापर्व में जनता ने अपना जनादेश सुना दिया है। इस जनादेश में पिछले दस सालों से सत्ता में बैठी भाजपा को तगड़ा झटका लगा है। उससे भी बड़ा झटका लगा है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को। क्योंकि इस चुनाव ने नरेंद्र मोदी का अहंकार तोड़ दिया है। प्रधानमंत्री मोदी को जो 'एक अकेला सब पर भारी' का अहंकार था वो इस चुनाव के नतीजों के जरिए जनता ने तोड़ दिया है। इन नतीजों ने कहीं न कहीं ये साबित कर दिया है कि अहंकार किसी का अच्छा नहीं होता फिर वो चाहे रावण हो या फिर नरेंद्र मोदी। आपको याद होगा कि लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर हुई बहस का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष को चुनौती देते हुए कहा था कि मोदी अकेला सब पर भारी है। दूसरी बात उन्होंने कही थी कि भाजपा अकेले 370 सीटें जीतेगी और एनडीए की सीटें चार सौ पार होंगी।

उस वक्त तो प्रधानमंत्री ने ये सभी बातें बड़े जोश-जोश में बोल दी थीं, लेकिन चुनाव के जब नतीजे खुले तो ऐसा लग रहा है कि मोदी के ये ही बड़े-बड़े दावे और उनका अहंकार इस चुनाव में उन्हें भारी पड़ गया। नतीजा ये हुआ कि भाजपा के 370 सीटें जीतना तो दूर 270 तक के लाले पड़ गए। वहीं इन नतीजों ने ये साबित कर दिया कि जनता को एक अकेला सब पर भारी वाला तानाशाह नहीं चाहिए। बल्कि उन्हें ऐसा प्रधानमंत्री चाहिए जो सबको साथ लेकर चल सके। लोकतंत्र में जब जब कोई एक सब पर भारी पड़ा है, जनता ने उसके बढ़ते कदम रोक दिए। यही भारत के लोकतंत्र की खासियत है, जो किसी को तानाशाह बनने से रोक देती है। बेशक संभव है कि अभी भी भाजपा समर्थित एनडीए ही सरकार बनाएगा और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री भी बन सकते हैं, लेकिन ये तय है कि इस बार की गठबंधन की सरकार में नरेंद्र मोदी की तानाशाही नहीं चलेगी, न ही वो जो चाहेंगे कर सकेंगे। क्योंकि इस जनादेश ने ये संदेश दे दिया कि जनता को मोदी की तानाशाही कतई पसंद नहीं आई है। तभी जनता ने इस हालत में लाकर खड़ा कर दिया है कि चुनावों के आखिरी दिनों में एनडीए में लौटे तेलुगु देशम और जेडीयू के कारण ही भाजपा सरकार बनाने की स्थिति में आ सकती है। ये दोनों बिदक गए तो एनडीए की नहीं, इंडिया एलायंस की सरकार बन सकती है। तमाम ओपिनियन पोल और एग्जिट पोल के दावों के विपरीत भारतीय जनता पार्टी सिर्फ 240 सीटों पर ही सिमट गई। कहीं न कहीं इसके पीछे खुद पीएम मोदी और उनकी तानाशाही जिम्मेदार है।

2014 और 2019 में स्पष्ट बहुमत मिलने के बाद नरेंद्र मोदी ने ये समझ लिया था कि भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस का विकल्प बन चुकी है। 1989 से लेकर 2014 तक चली गठबंधन की राजनीति का अंत हो गया है। इसलिए गठबंधन के सहयोगियों से विचार विमर्श बिलकुल बंद हो गया था। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने ही सहयोगियों की उपेक्षा शुरू कर दी थी। क्योंकि उनको पता था कि भाजपा अकेले ही काफी है, गठबंधन महज नाम का ही है। लगातार उपेक्षा का ही कारण रहा कि पहले 2018 में तेलुगू देशम छोड़कर गई थी, फिर 2019 के बाद चार बड़े क्षेत्रीय दल शिवसेना, जेडीयू, अकाली दल और अन्ना द्रमुक छोड़कर गए। नरेंद्र मोदी और अमित शाह को याद रखना चाहिए था कि 2004 में जब द्रमुक जैसे बड़े घटक दल एनडीए छोड़कर गए थे, तो भाजपा को हिन्दी पट्टी में भी नुकसान हो गया था। ये दल एनडीए को छोड़ कर जा रहे थे, तो उन्हें मनाने की कोशिश नहीं की गई। भाजपा ने जब एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाना कबूल कर लिया, तो उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री बनाने में क्या दिक्कत थी। एनडीए के संयोजक भी नीतीश कुमार या किसी अन्य सहयोगी दल के नेता को बनाने के बजाए खुद अमित शाह बन गए। ऐसा लग रहा था कि नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने एनडीए को खत्म करने का मन बना लिया है, क्योंकि 2019 के बाद एनडीए की बैठक ही नहीं बुलाई गई। एक बैठक बुलाई भी गई, तो उनकी बात सुनने के बजाए उन्हें प्रवचन दिया गया।

जिन्होंने कभी नकारा, अब उनके ही भरोसे मोदी

शिवसेना और जेडीयू को कमजोर करने की नरेंद्र मोदी की रणनीति को भांपते हुए ही इन दोनों ही दलों ने एनडीए छोड़ा था। नरेंद्र मोदी को एनडीए की याद तब आई, जब जून 2023 में इंडिया एलायंस बन रहा था। यह अलग बात है कि अपने अपने प्रदेशों की स्थानीय राजनीति के चलते तेलुगु देशम और जेडीयू एनडीए में वापस आ गए। आज चुनाव नतीजे देखते हैं तो साफ है कि इन्हीं दोनों दलों के भरोसे एनडीए सरकार बनने की स्थिति बनी है। लेकिन इनका साथ कब तक टिका रहेगा, यह बहुत कुछ मोदी और अमित शाह के व्यवहार पर निर्भर करेगा। क्योंकि जाहिर है कि चंद्रबाबू नायडू और नरेंद्र मोदी के रिश्ते कभी उतने मधुर नहीं रहे हैं। ये वो ही नायडू हैं जिन्होंने नरेंद्र मोदी के लिए काफी उल्टा सीधा बोला था और एक समय तो मोदी का इस्तीफा तक मांग लिया था। जबकि नीतीश कुमार की फितरत से तो हर कोई भली-भांति वाकिफ है। गिरगिट भी इतना जल्दी रंग न बदल पाए जितनी जल्दी नीतीश कुमार पाला बदल देते हैं। इसका उदाहरण उन्होंने पिछले एक-डेढ़ साल के अंदर ही दिया है। वो तो राजनीति का खेल ऐसा है कि आज ये दोनों ही एक बार फिर भाजपा के खेमे में हैं और बीजेपी की सरकार बनना न बनना भी इन्हीं दोनों पर निर्भर है। ऐसे में इन दोनों पर भरोसा कब तक किया जा सकता है या कितना किया जा सकता है, इस बात को तो नरेंद्र मोदी और अमित शाह भी अच्छे से ही जानते हैं। इसलिए भलाई इसी में होगी कि मोदी अपने तानाशाही रवैये को किनारे रखकर इन दोनों नेताओं से सामंजस्य बनाकर चलें।

क्षत्रपों को किनारे लगाना पड़ा भारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कर्नाटक के क्षत्रप येदियुरप्पा, महाराष्ट्र के क्षत्रप देवेन्द्र फडनवीस, राजस्थान की क्षत्रप वसुंधरा राजे, मध्यप्रदेश के क्षत्रप शिवराज सिंह चौहान और हरियाणा में जातीय समीकरणों के चलते क्षत्रप बन चुके मनोहर लाल खट्टर को उनके राज्यों की राजनीति से दूर करने का खामियाजा भी भुगता है। मध्य प्रदेश को छोड़कर इन सभी राज्यों में भाजपा को कांग्रेस के हाथों मार खानी पड़ी है। महाराष्ट्र में शिवसेना को तोड़कर उद्धव ठाकरे से उनके पिता की विरासत छीनने में भाजपा पूरी तरह नाकाम रही। शरद पवार की पार्टी तोड़ने का फैसला भी गलत साबित हुआ, उद्धव ठाकरे और शरद पवार को सहानुभूति का लाभ मिला और उसका फायदा कांग्रेस को हुआ। भाजपा नेतृत्व को यह बड़ी गलतफहमी हो गई है कि वह अब कैडर बेस पार्टी नहीं रही, मास बेस पार्टी बन गई है। इसलिए कैडर की कोई जरूरत नहीं रही। 370 खत्म होने और रामजन्म भूमि मन्दिर बनने के बावजूद भाजपा कैडर अपने नेता से खफा था। इसका बड़ा कारण यह था कि नरेंद्र मोदी और अमित शाह के पार्टी संगठन पर हावी होने के बाद संगठन और विचारधारा से जुड़े नेताओं को किनारे कर के बाहरी लोगों को भारी तादाद में टिकट दिए गए, खासकर ब्यूरोक्रेट्स और अन्य पार्टियों से आए दलबदलुओं को नेता बनाकर संगठन के निष्ठावान कार्यकर्ताओं से उनके लिए काम करने को कहा गया। जिस केडर ने पीढी दर पीढी विचारधारा के लिए काम करते हुए भाजपा को इस स्थिति तक पहुंचाया था, उन्हें बिलकुल किनारे कर दिया गया था। इस बार ऐसे अनेक कार्यकर्ता और नेता घर बैठ गए। भाजपा को इसका भी बड़ा नुकसान उठाना पड़ा।

आरक्षण-संविधान के मुद्दे ने बिगाड़ा गेम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस विकास के मुद्दे के साथ चुनाव प्रचार की शुरुआत की थी, उसे वह ज्यादा देर बरकरार नहीं रख सके। पहले दौर की कम वोटिंग से घबरा कर उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम करना शुरू कर दिया। क्योंकि जिस तरह से विपक्ष ने जनता से जुड़े मुद्दों को उठाया और अग्निवीर व आरक्षण और संविधान पर बीजेपी को घेरा, उससे ये साफ हो गया कि बीजेपी दबाव में आ गई और उसे अपनी हार का डर सताने लगा। इसी का नतीजा रहा कि नरेंद्र मोदी तुरंत ही अपने पुराने ढर्रे हिंदू-मुसलमान पर उतर आए। जिसके जवाब में इंडिया एलायंस के नेताओं ने रणनीति बनाई, तो अखिलेश यादव ने कहा कि अगर वह हिन्दू मुस्लिम करके ध्रुवीकरण की कोशिश शुरू कर रहे हैं, तो हमें भी संविधान और आरक्षण की बात करनी चाहिए, जिस पर इंडिया

एलायंस में सहमति बनी और फ्रंट फुट पर खेल रहे मोदी और अमित शाह बैकफुट पर आ गए। अखिलेश यादव और राहुल गांधी की इस रणनीति से हिंदुत्व की राजनीति तार-तार हो गई, और जिस जातिवाद को तोड़ कर 2014 और 2019 में भाजपा जीती थी, उस पर जातिवाद की राजनीति हावी हो गई। कांग्रेस तो अपनी हर रैली और रोड शो में संविधान की किताब लेकर जाने लगी। विपक्ष द्वारा बीजेपी के 400 जीतने पर संविधान बदल देने के मुद्दे को इतनी तेजी से उठाया गया कि बीजेपी पूरी तरह से दबाव में आ गई और दूसरी ओर जनता इंडिया गठबंधन की बातों पर यकीन करने लगी। इसी का नतीजा रहा कि मोदी और शाह को सफाई देनी पड़ी कि वे न तो संविधान बदलेंगे, न आरक्षण खत्म करेंगे, लेकिन दलितों और ओबीसी को डराने के लिए संघ और भाजपा नेताओं के पुराने बयान भुनाए गए, जिनमें आरक्षण की समीक्षा करने की बात कही थी। इस प्रचार का दलित समुदाय पर खासकर असर हुआ और उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा में बसपा का सारा वोट बैंक इंडिया एलायंस की तरफ शिफ्ट हो गया। भाजपा को मायावती को कमजोर करने का खामियाजा भी भुगतना पड़ा। यूपी में अब दलित वोट बैंक का नया भाजपा विरोधी मसीहा पैदा हो गया है।

संघ की नाराजगी पड़ी भारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा की सामूहिक नेतृत्व वाली पुरानी नीति को किनारे करके सारी पार्टी को दब्बू बना दिया था। प्रदेश अध्यक्षों और प्रदेशों के महामंत्री ही नहीं प्रदेश कार्यकारिणी सदस्यों की नियुक्ति भी दिल्ली से होने लगी थी। यहां तक कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी कोई फैसला बिना अमित शाह और प्रधानमंत्री की सलाह लिए नहीं कर रहे थे। संसदीय बोर्ड भी पंगु बन कर रह गया था। सारी परंपराओं को तोड़कर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी को संसदीय बोर्ड से बाहर कर दिया गया। पिछले पांच सालों से पार्टी के भीतर नियुक्तियों पर सारा नियन्त्रण मोदी और शाह के हाथ में था। पहले संगठन पर संघ से भेजे गए संगठन महामंत्रियों की पकड़ रहती थी, लेकिन जब से अमित शाह पार्टी अध्यक्ष बने तब से न सिर्फ राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, बल्कि राज्यों के संगठन महामंत्री भी किनारे कर दिए गए। जनसंघ और भाजपा के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि राष्ट्रीय संगठन महामंत्री रामलाल ने संघ में वापस जाने की इच्छा जाहिर की और संघ ने उन्हें वापस बुला लिया। अन्यथा संघटन महामंत्रियों को लग्जरी लाईफ का चस्का लग जाता है और वापस जाने का नाम तक नहीं लेते। हाल के चुनावों के बीच पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने न जाने किसके कहने पर यह कह दिया कि पार्टी आत्मनिर्भर हो गई है। संघ इससे खफा हुआ और संगठन महामंत्रियों को वापस बुलाने पर विचार कर रहा है। कर्नाटक के संगठन महामंत्री को वापस बुलाने से इसकी शुरुआत हो गई है। यह क्यों नहीं माना जाना चाहिए कि संघ ने इस बार के चुनाव में मन से काम नहीं किया, क्योंकि संघ में व्यक्ति पूजा नहीं होती, जबकि नरेंद्र मोदी ने पिछले दस सालों में अपना कद संघ और भाजपा से बड़ा बना कर पेश किया, जब उन्होंने मोदी की गारंटिया बांटनी शुरू की, तो उसे संघ में ठीक नहीं माना गया। कहीं न कहीं संघ की नाराजगी भी बीजेपी को बहुत भारी पड़ गई और उसी का नतीजा रहा कि बीजेपी चुनावों में औंधे मुंह गिरी।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

खेवनहार चलायेंगे देश की सरकार!

लोकसभा चुनावों के नतीजे सामने आने के बाद हर किसी की निगाहें टिकी हैं देश की अगली सरकार पर। बेशक भाजपा समर्थित एनडीए ने बहुमत पा लिया है, लेकिन जिनकी दम पर वो सरकार बनाने का दावा कर सकती है। उन पर भरोसा करना भाजपा के ही लिए काफी मुश्किल लग रहा है। दरअसल, बीजेपी इस बार खुद 240 सीटों पर ही लटक गई है। यानी अपने पूर्ण बहुमत से 32 सीटें दूर। हालांकि, एनडीए जरूर 292 सीटें पाकर बहुमत पार कर गई। मौजूदा वक्त में बीजेपी के पास 272 के बहुमत के आंकड़े से 20 सीटें ज्यादा हैं। ऐसी दशा में एनडीए के बीजेपी के अलावा दो प्रमुख दल टीडीपी और जेडीयू हैं, जिनके पास क्रमश: 16 और 12 सीटें हैं। अगर इन दोनों की सीटों को मिला दें तो 28 सीटें हो जाती हैं। अगर ये 28 सीटें एनडीए के खेमे से हट जाएं तो एनडीए का आंकड़ा भी 272 से नीचे आ जाएगा। ऐसी परिस्थिति में एनडीए 264 पर आ जाएगी। इसलिए इस समय पूरी भाजपा के लिए टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू और जेडीयू प्रमुख नीतीश कुमार काफी अहम हैं।

बेशक ये दोनों ही नेता साफ कह चुके हैं कि वो एनडीए के साथ हैं और सरकार बनाने जा रहे हैं। लेकिन यहां ध्यान देने वाली बात ये है कि ये दोनों कब तक साथ हैं इसका कोई भरोसा नहीं है। क्योंकि ये दोनों ही वो नेता हैं जो कभी भी एनडीए से अपना समर्थन वापस ले सकते हैं। पहले भी ये दोनों ही ऐसा कर चुके हैं। चंद्रबाबू नायडू तो 2002 के गुजरात दंगों के वक्त तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी का इस्तीफा तक मांग चुके हैं। वहीं 2018 में एनडीए से अलग होने के बाद नायडू की टीडीपी ने मोदी सरकार के खिलाफ संसद में अविश्वास प्रस्ताव भी पेश किया था। हालांकि, ये प्रस्ताव गिर गया था। 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान मोदी और नायडू के बीच कई बार तीखी बयानबाजी भी हुई थी। गठबंधन से अलग होने के कारण पीएम मोदी ने नायडू को यूटर्न बाबू कहा था। वहीं अगर नीतीश कुमार की बात करें तो बिहारी बाबू पाला बदलने में कितने माहिर हैं ये तो हर कोई काफी अच्छे से जानता है। वहीं नायडू की तरह ही नीतीश और मोदी के रिश्ते भी काफी उतार-चढ़ाव वाले रहे हैं। क्योंकि नीतीश भी कई बार एनडीए का साथ छोड़ चुके हैं। यहां तक कि वो जीते जी एनडीए में वापस न जाने की कसमें भी खा चुके हैं। लेकिन अब इस समय ये ही दोनों नरेंद्र मोदी के खेवनहार बने हुए हैं। इसलिए मोदी समेत पूरी भाजपा नायडू-नीतीश की हां में हां मिला रही है। वहीं दूसरी ओर ये भी साफ है कि इस बार की सरकार में मोदी जी अपनी तानाशाही नहीं चला सकेंगे, क्योंकि नायडू और नीतीश दोनों की विचारधाराएं मोदी से मेल नहीं खाती हैं। फिलहाल देखते हैं आगे क्या होता है।

मौजूदा वक्त में बीजेपी के पास 272 के बहुमत के आंकड़े से 20 सीटें ज्यादा हैं। ऐसी दशा में एनडीए के बीजेपी के अलावा दो प्रमुख दल टीडीपी और जेडीयू हैं, जिनके पास क्रमश- 16 और 12 सीटें हैं। अगर इन दोनों की सीटों को मिला दें तो 28 सीटें हो जाती हैं। अगर ये 28 सीटें एनडीए के खेमे से हट जाएं तो एनडीए का आंकड़ा भी 272 से नीचे आ जाएगा। ऐसी परिस्थिति में एनडीए 264 पर आ जाएगी।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

इस जनमत के निहितार्थ भी समझिए

विश्वनाथ सचदेव

आशाओं और आशंकाओं के बीच झूलते हुए लोगों ने आम-चुनाव के परिणामों को देखने-समझने की कोशिश की है। इसी समझ का एक परिणाम यह भी है कि सारा चुनाव-प्रचार इस बात का साक्षी रहा है कि संकल्प-पत्र की गारंटियों और घोषणापत्रों के दावों के बावजूद कम से कम भाजपा की ओर से यह चुनाव मुद्दों से कहीं अधिक पार्टी के 'एकछत्र नेता' के नाम पर अधिक लड़ा गया था। हमारे संविधान में भले ही ऐसी कोई व्यवस्था न हो, पर पिछले चुनाव की तरह ही इस बार भी अमेरिका की राष्ट्रपति-प्रणाली की तरह चुनाव लड़ने की कोशिश सत्तारूढ़ दल ने अवश्य की थी। ऐसा नहीं है कि इस बार मुद्दे थे ही नहीं, पर मुद्दों की जगह जुमले ज्यादा उछले। 'इंडिया एलायंस' ने जरूर संविधान की रक्षा जैसे सवाल उठाये और महंगाई बेरोजगारी की बात की, लेकिन यह भी हमने देखा कि चुनाव-प्रचार के दौरान संविधान को बदलने की कोशिशों के संकेत भी दिये गये।

भाजपा पर संविधान को बदलने की कोशिशों की बात कांग्रेस पार्टी ने उठायी थी। आरोप यह था कि भाजपा संविधान को बदलकर देश को तानाशाही की ओर ले जा सकती है। भाजपा ने इस बात का पुरजोर खंडन किया और हमारे संविधान के मुख्य शिल्पी बाबा साहेब अंबेडकर की दुहाई देकर संविधान में अपनी आस्था प्रकट की। यह कहना तो मुश्किल है कि संविधान को लेकर उठे इस मुद्दे का चुनाव के नतीजे पर क्या और कितना असर पड़ा, पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि संविधान के साथ छेड़छाड़ की इस बात ने देश के नागरिकों के एक वर्ग को चौकन्ना अवश्य बना दिया था। संविधान को लेकर इधर चर्चाएं भी हो रही हैं। यही वह समय है जब यह जरूरी हो गया है कि देश में संविधान की महत्ता और उसे लेकर उठाये जा रहे सवालों पर देश का प्रबुद्ध नागरिक विचार करे। हमारे संविधान-निर्माताओं ने इस बात को रेखांकित करना जरूरी समझा था कि यह देश हर भारतीय का है। जाति, धर्म, वर्ग, वर्ण के आधार पर किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा सकता। हमारा संविधान नागरिक के कर्तव्य और अधिकारों की स्पष्ट व्याख्या करता है।

था एक वर्ग जो समान अधिकार के नाम पर 'राजा और गंगू तेली' को समानता देने के तर्क को समझ नहीं पाया था, पर देश की सामूहिक चेतना ने हर नागरिक को वोट का अधिकार देकर यह सुनिश्चित कर दिया था कि जनतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास करने वाला हमारा

गणतंत्र क्षमता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुता के ठोस आधारों पर खड़ा है। यहां हर एक के वोट का अधिकार समान है; यहां हर एक को न्याय पाने का अधिकार है; यहां हर एक को विकास का सामान अधिक अवसर मिलेगा; यहां हर एक को अपनी आस्था के अनुसार जीवन-यापन करने की सुविधा मिलेगी। देश के नागरिक को यदि किसी बात की गारंटी की आवश्यकता है तो वह इस बात की है कि उसे एक सार्वभौम स्वतंत्र देश के गौरवशाली नागरिक के रूप में जीने का अधिकार और अवसर प्राप्त हो। हमारा संविधान इस बात की गारंटी देता है। यही गारंटी इस बात को भी सुनिश्चित करती है कि देश का हर निर्वाचित शासक संविधान के बुनियादी ढांचे के अनुरूप कार्य करेगा। समय और स्थितियों के अनुसार संविधान में संशोधन अवश्य हो सकता है, पर संविधान की मूल आत्मा को बदलने का अधिकार किसी को नहीं है। क्या है यह संविधान की मूल आत्मा? इस प्रश्न का उत्तर हमारे संविधान की प्रस्तावना में छिपा है। हमारे संविधान-निर्माताओं ने इस प्रस्तावना में स्पष्ट शब्दों में कहा था, 'हम भारत के लोग एक समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, जनतांत्रिक गणतंत्र' की स्थापना करते हैं। हमने इस संविधान को स्वयं आत्मार्पित किया था। सौ से अधिक बार आवश्यकता के अनुसार संविधान में संशोधन हो चुके हैं, पर प्रस्तावना में वर्णित अवधारणाओं को कहीं छेड़ा नहीं गया। समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, जनतांत्रिक गणतंत्र यह चार शब्द मात्र शब्द नहीं हैं, इन चार शब्दों में वे सारे सपने समाहित हैं जो हमने 75 साल पहले अपने लिए देखे थे। देश का हर प्रयास उन सपनों को पूरा करने की दिशा में उठाया गया एक ठोस कदम होना चाहिए।

हम सबके पास कुछ सपने होते हैं- अपने लिए, अपनों के लिए। सपनों की यह लक्ष्मण रेखाएं बंधन बन रही हैं। इन बंधनों से उबरना होगा- जब हमारा सपना सबके लिए सपना बनेगा, तब हमारा जनतंत्र सही अर्थ में सफलता की राह पर चलेगा। यह सफलता ही हम सब का सपना होनी चाहिए। आज हमारे नेता विकसित भारत की बात कर रहे हैं- परिभाषित करना होगा इस विकास को। यह विकास तभी सही माने में अर्थवान होगा जब यह सबका विकास होगा। यह काम नारों से नहीं होगा, पूरी ईमानदारी के साथ करने से होगा। ईमानदारी की इस परीक्षा में सबसे पहले हमारे उन नेताओं को उत्तीर्ण होना होगा जो हमें गारंटियों से भरमाते रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के मुकाबले को बनें कारगर नीतियां

ज्ञानेन्द्र रावत

जलवायु परिवर्तन समूची दुनिया के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है। जलवायु परिवर्तन से समुद्र का जलस्तर बढ़ने से कई द्वीपों और दुनिया के तटीय महानगरों के डूबने का खतरा पैदा हो गया है। इस संकट से जूझ रही दुनिया इसकी भारी आर्थिक कीमत चुका रही है। सबसे बड़ा संकट तो जमीन के दिनों-दिन बंजर होने का है। यदि सदी के अंत तक तापमान में दो डिग्री की भी बढ़ोतरी हुई तो 115.2 करोड़ लोगों के लिए जल, जमीन और भोजन का संकट पैदा हो जायेगा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस का कहना है कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के लक्ष्य अब भी पहुंच से बाहर हैं। समय की मांग है कि विश्व समुदाय सरकारों पर दबाव बनाये ताकि वे इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत को समझ सकें।

समूची दुनिया में करीब 40 फीसदी जमीन बंजर हो चुकी है। इसमें यदि 6 फीसदी घोषित रेगिस्तान को छोड़ दिया जाये तो शेष 34 फीसदी जमीन पर करीब 4 अरब लोग निर्भर हैं। इस पर सूखा, यकायक ज्यादा बारिश, बाढ़, खारेपन, रेतीली हवाओं आदि के चलते बंजर होने का खतरा मंडरा रहा है। यह भी कि तेजी से बढ़ रही आबादी और जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की पैदावार दर में तीन फीसदी की गिरावट के अंदेशे से दुनिया में 2050 तक भोजन की भारी कमी का सामना करना पड़ेगा। फिर दुनिया की 50 फीसदी प्राकृतिक चारागाहों की जमीन के नष्ट होने से जलवायु, खाद्य आपूर्ति और अरबों लोगों के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया है। यह भूमि वैश्विक खाद्य उत्पादन का छठा हिस्सा है जिस पर दुनिया के दो अरब लोग निर्भर हैं। जलवायु परिवर्तन से मानसिक सहित कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं खड़ी हो रही हैं। लैंसेट न्यूरोलॉजी जर्नल में प्रकाशित शोध में खुलासा हुआ है कि इसका माइग्रेन, अल्जाइमर आदि से पीड़ित लोगों पर ज्यादा नकारात्मक असर पड़ता है। चिंता, अवसाद और सिजोफ्रेनिया सहित कई गंभीर बीमारियों को भी गहरे तक प्रभावित किया है। जलवायु के प्रभाव से स्ट्रोक और मस्तिष्क में संक्रमण के प्रमाण पाये गये हैं। इससे तनाव, अवसाद के मामलों में बढ़ोतरी हो सकती है। साथ ही दुनिया के 70 फीसदी श्रमिकों यानी 240 करोड़ लोगों की सेहत पर खतरा है।

जलवायु परिवर्तन के असर से जीव-जंतु और पेड़-पौधे भी अछूते नहीं। जंगलों की अंधाधुंध कटाई और तीव्र औद्योगीकरण ने इकोसिस्टम को भी जबरदस्त प्रभावित किया है। इससे 30 फीसदी प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में है। प्रतिकूल जलवायु के कारण जीव-जंतुओं को अपना प्राकृतिक वास छोड़ना पड़ सकता है। उनकी प्रजनन क्षमता भी प्रभावित होगी। यूनीसेफ ने चेतावनी दी है कि यदि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ठोस कोशिश नहीं की गयी तो दुनिया में लगभग एक अरब बच्चे जलवायु संकट के प्रभावों के अत्यंत उच्च जोखिम का सामना करने को विवश होंगे। दरअसल बढ़ते तापमान, पानी की कमी और खतरनाक श्वसन स्थितियों का घातक प्रभाव बच्चों पर अधिक पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन से पूरे विश्व को होने वाला नुकसान पहले के अनुमान से छह गुणा अधिक है। सदी के अंत तक यह 38 ट्रिलियन डॉलर हो जायेगा। बढ़ते तापमान, भारी वर्षा और तीव्र चरम मौसम के कारण मध्य शताब्दी तक हर साल 38 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होने का अनुमान है। जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित न करना इसके बारे में कुछ करने की तुलना में बहुत अधिक महंगा है। शोध के अनुसार 1.8 डिग्री सेल्सियस दुनिया पहले ही गर्म हो चुकी है। 1056 डालर प्रति टन नुकसान होता है कार्बन उत्सर्जन से और 12 फीसदी की जीडीपी में गिरावट तापमान वृद्धि की वजह से होती है। फिर जलवायु परिवर्तन से सुपरबग का दिनों-दिन बढ़ता खतरा महामारी का रूप लेता जा रहा है। सुपरबग ऐसा बैक्टीरिया है जिस पर एंटीबायोटिक दवाओं का कोई असर नहीं होता। चिकित्सा के क्षेत्र में ये सबसे बड़ी चुनौती है। अमेरिका की प्रिंसटन यूनिवर्सिटी ने जलवायु परिवर्तन के कारण चक्रवात की घटनाएं बढ़ने की आशंका जताई है। अध्ययन कर्ताओं ने कहा है कि समुद्र के बढ़ते जलस्तर और जलवायु परिवर्तन के कारण अगले कुछ दशकों में तटीय इलाकों में भीषण चक्रवात एवं तूफानों के बीच समय का अंतराल कम हो जायेगा। इस बारे में अब तक उठाए गये कदम जलवायु लक्ष्यों के अनुरूप नहीं हैं और उनकी रणनीतियां अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं। ऐसी हालत में जलवायु लक्ष्य पाना बेहद मुश्किल है। फिर जलवायु संकट से निपटने के लिए दुनिया में जारी प्रयास स्वैच्छिक हैं। इस दिशा में जब तक कानूनी रूप से बाध्यकारी नीतियां नहीं होंगी, तब तक जलवायु लक्ष्यों को पाना मुश्किल है। यूरोपीय मानवाधिकार अदालत का मानना है कि देशों का दायित्व है कि वे अपने नागरिकों को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से हरसंभव तरीके से बचाने का प्रयास करें। यहां बड़ा सवाल यह भी कि जलवायु की रक्षा के लिए इतना पैसा कहां से जुटाया जायेगा। कॉप 28 सम्मेलन में भी इस बाबत हानि एवं क्षति कोष में शुरुआती रूप से 47.50 करोड़ डॉलर फंडिंग का अनुमान था। इसके लिए विकासशील देशों को हर साल करीब 600 अरब डॉलर की जरूरत होगी जो विकसित राष्ट्रों द्वारा किए गये वादे से काफी कम है। ऐसी स्थिति में अमीर देशों पर अतिरिक्त टैक्स ही जलवायु संकट से उबार सकता है।

बर्फीले पहाड़ों का आनंद लेने के लिए इन हिल स्टेशनों पर जाएं

जून-जुलाई में पड़ने वाली गर्मी से बचने के लिए ज्यादातर लोग घूमने के लिए निकल पड़ते हैं। गर्मियों के मौसम में लोग ऐसी जगह जाना पसंद करते हैं जहां उन्हें ठंडक मिले और गर्मी से राहत मिले। ऐसे में आप भारत के खूबसूरत हिल स्टेशन जैसे लद्दाख लहौल और स्पीति घाटी और माउंट आबू जाने का प्लान बना सकते हैं। गर्मियों का मौसम पहाड़ों पर घूमने के लिए सबसे सही समय होता है। क्योंकि, हर साल जून-जुलाई के महीने में लोग गर्मियों की छुट्टियों का आनंद लेते हैं। अगर आप भी गर्मियों के मौसम में घर बैठकर बोर हो रहे हैं, तो भारत के कुछ प्रसिद्ध टूरिस्ट डेस्टिनेशनों पर अपने परिवार के साथ घूमने के लिए जा सकते हैं।

शिमला

हिमाचल प्रदेश में शिमला का कुदरती सौंदर्य पर्यटकों का दिल जीत लेता है। यह आपको ठंडक का अनुभव करने का मौका देते हैं। गर्मियों के मौसम में इस जगह पर लोगों का तांता लगा रहता है। हरी-भरी वादियों के बीच आसमान से बरसती स्नोफॉल में बिताए यादगार पलों की बात ही कुछ और होती है।

माउंट आबू, राजस्थान

राजस्थान का माउंट आबू जून महीने में ठंडी हवाओं और आरामदायक मौसम के लिए प्रसिद्ध हैं। यह राजस्थान का एक जाना माना हिल स्टेशन है। माउंट आबू मे उंचाई के कारण गर्मी में भी तापमान अधिक नहीं हो पाता तथा सर्दी में जमाव बिंदु 0 सेल्सियस से भी नीचे पहुंच जाता है। इसके विपरीत मैदानी भागों की समुद्र तल से ऊंचाई कम होने के कारण वहां तापमान में अंतर अधिक पाया जाता है।

लद्दाख, जम्मू और कश्मीर

लद्दाख भारत के टॉप टूरिस्ट डेस्टिनेशन में से एक है। यहां के ऊंचे और पथरीले पहाड़ों की सुंदरता यात्रियों के दिल में घर कर जाती है। जून के महीने में लद्दाख जाकर आप प्राकृतिक सौंदर्य और बर्फ का अनुभव कर सकते हैं।

मुन्नार, केरल

केरल राज्य का शहर मुन्नार हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। यहां के सुंदर नजारे यात्रियों का दिल जीत लेते हैं। जून महीने में घूमने के लिए यह सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

लहौल और स्पीति घाटी, हिमाचल प्रदेश

लहौल और स्पीति हिमाचल प्रदेश में एक बहुत ही खूबसूरत जगह है। यहां जून के महीने में जाना बहुत ही अच्छा माना जाता है। गर्मियों में इस जगह की खूबसूरती और भी ज्यादा निखर जाती है। साथ ही, यहां के पहाड़ और शांति आपको यादगार अनुभव देती है।

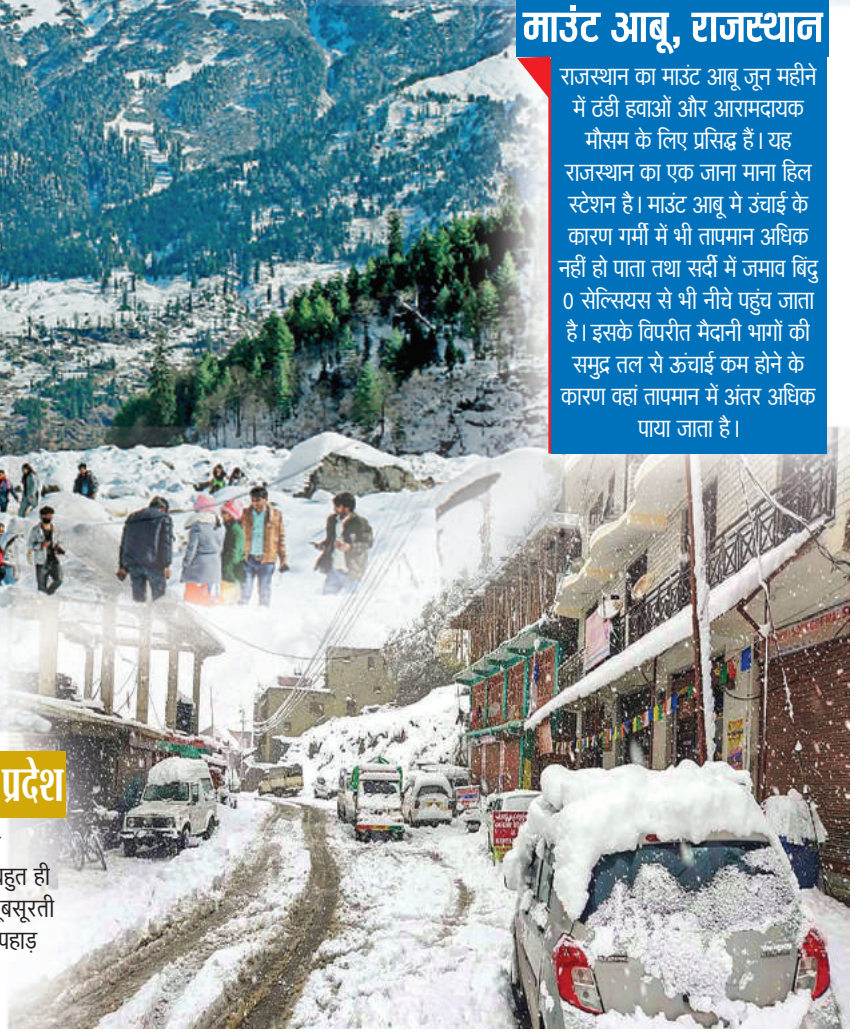

हंसना मना है

तीसरी क्लास का बच्चा (टीचर से) - मैडम मैं आपको कैसा लगता हूं? मैडम- सो स्वीट, बच्चा- तो मैं अपने मम्मी पापा को कब भेजूं आपके घर? मैडम- क्यों? बच्चा- बात आगे बढ़ाने के लिये! मैडम - ये क्या बकवास है? बच्चा - ट्युशन के लिए! क्या मैडम आप भी ना कसम से व्हाट्सएप पढ़-पढ़कर बिगड़ गई हो।

प्राइमरी क्लास में मास्टर साहब गणित सिखा रहे थे, मास्टर साहब-बेटा, मान लो मैंने तुम्हें 10 लड्डू दिए! पप्पू- क्यों मान लूं आपने तो मुझे एक भी नहीं दिया? मास्टर साहब-अरे मान ले न! मानने में तेरे बाप का क्या जाता है? पप्पू- ठीक है, मास्टर साहब -हां, तो उसमें से 5 तुमने मुझे वापस दे दिए, तो बताओ तुम्हारे पास कितने लड्डू बचे? पप्पू-20 मास्टर साहब-कैसे? पप्पू-मान लीजिए ना! मानने में आपके बाप का क्या जाता है!

लड़का - सर, मैं आपकी बेटी से शादी करना चाहता हूं। पिता- कितना कमाते हो? लड़का - हर महीने 26000, पिता - मैं अपनी बेटी को 25000 पाकिट मनी के हर महीने देता हूं। लड़का - वो मिला के ही बोल रहा हूं।

कहानी | डर का सामना

एक दिन की बात है स्वामी विवेकानंद मंदिर में दर्शन करने के बाद प्रसाद लेकर बाहर निकले। कुछ देर आगे चलने के बाद स्वामी के घर के रास्ते में उन्हें कुछ बंदरों ने घेर लिया। स्वामी थोड़ा आगे बढ़ते और वो बंदर उन्हें काटने को आते। काफी देर तक स्वामी विवेकानंद ने आगे जाने की कोशिश की, लेकिन वो ऐसा कर न पाए। आखिर में स्वामी विवेकानंद वहां से वापस मंदिर की ओर लौटने लगे। उनके हाथ से प्रसाद की थैली को छीनने के लिए बंदरों की टोली भी उनके पीछे भागने लगी। स्वामी डर गए और वो भी डर के मारे दौड़ने लगे। दूर से मंदिर के पास बैठा एक बूढ़ा सन्यासी सब कुछ देख रहा था। उसने स्वामी को भागने से रोका और कहा, बंदरों से डरने की जरूरत नहीं है। तुम इस डर का सामना करो और फिर देखो क्या होता है। स्वामी विवेकानंद संन्यासी की बात सुनकर वहां ठहरे और बंदरों की तरफ मुड़ गए। अपनी तरफ तेजी से बंदरों का आता देखकर स्वामी भी उनकी तरफ उतनी ही तेजी से बढ़ने लगे। बंदरों ने जैसे ही स्वामी विवेकानंद को अपनी तरफ आता देखा, तो वो डरकर भागने लग गए। अब बंदर आगे-आगे भाग रहे थे और स्वामी जी बंदरों के पीछे-पीछे। कुछ ही देर में सभी बंदर उनके रास्ते से हट गए। इस तरह स्वामी विवेकानंद ने अपने डर पर जीत हासिल की। फिर वो लौटकर उसी संन्यासी के पास गए और उनको इतनी बड़ी बात सिखाने के लिए धन्यवाद कहा।

कहानी से सीख- कोई भी चीज डर का कारण तब तक बनी रहती है, जब तक हम उससे डरते हैं। इसी वजह से डर से डरने की जगह उसका सामना करना चाहिए। ऐसा करने से डर भाग जाता है।

7 अंतर खोजें

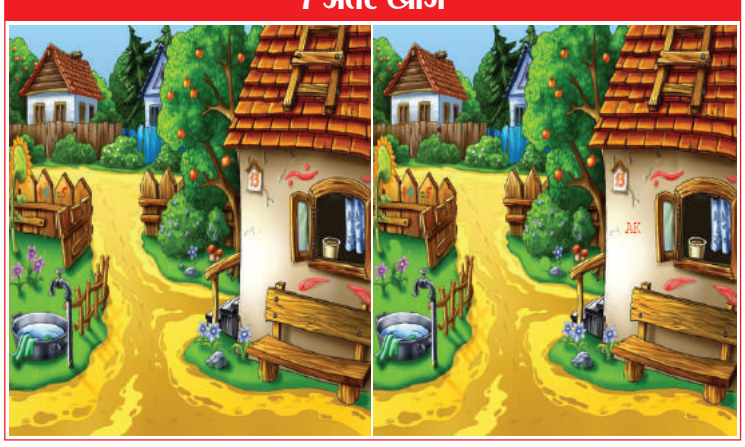

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

पुराना रोग परेशानी का कारण बन सकता है। अज्ञात भय सताएगा। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। कुसंगति से बचें।

वृषभ

शत्रु भय रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। शारीरिक कष्ट संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। भूमि व भवन संबंधी खरीद-फरोख्त की योजना बनेगी।

मिथुन

किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। कारोबार में बुद्धिबल से उन्नति होगी।

कर्क

लेन-देन में जल्दबाजी न करें। पुराना रोग उभर सकता है। दुःखद समाचार की प्राप्ति संभव है। किसी के उकसाने में न आएं। बात बिगड़ सकती है।

सिंह

पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। आय में वृद्धि होगी। कारोबार का विस्तार होगा। नौकरी में प्रमोशन मिल सकता है। प्रयास सफल रहेंगे।

कन्या

आय में वृद्धि होगी। कारोबार लाभप्रद रहेगा। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। दूर से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। घर में अतिथियों का आगमन होगा। व्यय बढ़ेगा।

तुला

प्रेम-प्रसंग में आशातीत सफलता प्राप्त होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। सट्टे व लॉटरी से दूर रहें। भाग्य का साथ मिलेगा।

वृश्चिक

राजभय रहेगा। विवाद को बढ़ावा न दें। लेन-देन में जल्दबाजी हानि देगी। शारीरिक कष्ट संभव है। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। व्यवस्था में मुश्किल होगी।

धनु

व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। नेत्र पीड़ा हो सकती है। मानसिक बेचैनी रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

मकर

राज्य से प्रसन्नता रहेगी। कोई बड़ा काम हो सकता है। नई योजना बनेगी। नया उपक्रम प्रारंभ हो सकता है। सामाजिक कार्य करने का अवसर मिलेगा।

कुम्भ

आंखों को चोट व रोग से बचाएं। धन प्राप्ति सुगम होगी। सुख के साधन जुटेंगे। कारोबार लाभदायक रहेगा। नौकरी में उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। पूजा-पाठ में मन लगेगा।

मीन

पुराना रोग उभर सकता है। अनहोनी की आशंका रहेगी। मातहतों से कहासुनी हो सकती है। पार्टनरों से मतभेद संभव है। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें।

तीसरी बार सांसद बनने पर गदगद हैं ड्रीम गर्ल

हेमा मालिनी ने लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की मथुरा सीट से जीत की हैट्रिक लगाई है। वह मथुरा से तीसरी बार चुनाव जीत गई हैं। अपनी इस जीत का उन्होंने खास अंदाज में जश्न मनाया है। न्यूज एजेंसी एएनआई ने एक वीडियो साझा किया है। इसमें हेमा मालिनी को फायर गन के साथ जीत की खुशी मनाते देखा जा सकता है।

सामने आए वीडियो में हेमा मालिनी के चेहरे पर जीत की खुशी साफ झलक रही है। वे नारंगी रंग की साड़ी पहने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर जश्न मना रही हैं। गले में फूलों की माला पहने ड्रीम गर्ल के हाथ में फायर गन है। उत्तर प्रदेश के मथुरा लोकसभा सीट से भाजपा की हेमा मालिनी ने तीसरी बार जीत दर्ज की है। उन्होंने कांग्रेस के प्रत्याशी मुकेश धनगर को हराया है।

लगाने के बाद हेमा मालिनीको विजेता प्रमाण पत्र मिला। हेमा मालिनी ने अपनी जीत पर सभी का शुक्रिया अदा किया। बॉलीवुड अभिनेत्री की जीत पर उनकी बेटी एशा देओल ने भी बधाई दी। एशा देओल ने अपनी मां की जीत पर पोस्ट साझा किया है। उन्होंने हेमा मालिनी की तस्वीर साझा कर लिखा, बधाई हो मम्मा, हैट्रिक।

राजनीति में आने से पहले हेमा मालिनी का फिल्मी दुनिया में लंबा करियर रहा है। उनकी गिनती सफल और काबिल अभिनेत्रियों में रही है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1963 में आई तमिल फिल्म इधु साथियम से की था। इसके बाद वे पहली बार फिल्म सपनों का सौदागर में नजर आईं। यह फिल्म साल 1968 में रिलीज हुई थी और इस हिंदी फिल्म में मुख्य भूमिका में नजर आई थीं।

हेमा मालिनी अभिनय के साथ-साथ नृत्य में भी पारंगत हैं। वे एक प्रशिक्षित भरतनाट्यम नृत्यांगना हैं। निजी जीवन की बात करें तो हेमा मालिनी ने दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र से शादी रचाई। इनकी दो बेटियां-एशा देओल और अहाना देओल हैं।

टीवी में साइड एक्ट्रेस को नहीं मिलती तवज्जो : उर्फी जावेद

बॉलीवुड | मसाला

उर्फी जावेद आज एक पॉपुलर फैशन इन्फ्लुएंसर हैं। अपने अतरंगी फैशन सेंस के कारण लाइम लाइट में रहती हैं। सोशल मीडिया पर लगातार ट्रोलिंग के बाद भी उर्फी ने खुद में कोई चेंज नहीं किया है। उर्फी भले ही अब सोशल मीडिया सेंसेशन और बॉलीवुड एक्ट्रेस बन चुकी हों, लेकिन उन्होंने करियर की शुरुआत छोटे पर्दे से की थी। अब टीवी को लेकर उन्होंने बड़ा खुलासा किया है।

उर्फी पॉपुलर टीवी सीरियल्स में नजर आ चुकी हैं। लेकिन अब उन्होंने छोटे पर्दे की दुनिया में कभी वापस न जाने का फैसला कर लिया है। अब उन्होंने ऐसा क्यों किया है, तो चलिए बताते हैं। जहां से उर्फी ने अपना करियर शुरू किया, वहीं वापस जाने से उन्होंने इंकार कर दिया है। वह छोटे पर कभी वापसी नहीं करेंगी। उन्होंने कहा, अगर आप टीवी शो में लीड एक्टर नहीं हैं, तो आपको बिलकुल भी तवज्जो नहीं मिलती। आपको कुत्तों की तरह ट्रीट करते हैं। टीवी में कुछ प्रोडक्शन हाउस बहुत बुरे हैं। टीवी ने मुझे बहुत रुलाया है। कुछ प्रोडक्शन हाउस पेमेंट भी देर से देते हैं और वो भी काट कर। उर्फी जावेद ने बड़े भईया की दुल्हनिया, चंद्र नंदिनी, बेपनाह, ये रिश्ता क्या कहलाता है जैसे सीरियल्स में साइड रोल में दिखे हैं। शोबिज वर्ल्ड में ज्यादा मौके न दिखने पर या मनपसंद काम न मिलने की वजह से उर्फी ने अपना रुख सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनना तय किया।

बॉलीवुड | मन की बात

फिल्म से ज्यादा ऐक्टर्स के तामझाम में हो रहा खर्च : अनुराग कश्यप

अनुराग कश्यप हमेशा बेधड़क अपनी बात कहने के लिए जाने जाते हैं। अब अनुराग ने बड़ी फिल्मों के बड़े फ्लॉप बन जाने को लेकर बात की है। इन दिनों बॉलीवुड में ये डिबेट गर्म है कि फिल्मों में स्टार्स के खर्चे ही इतने होते हैं कि बजट बढ़ जाता है और फिल्में जरूरत से ज्यादा महंगी बनती हैं। अनुराग कश्यप ने इस बारे में अपनी राय रखते हुए, बॉक्स ऑफिस पर फेल होती बड़े बजट की फिल्मों के बारे में बात की, उन्होंने कहा भी कहा कि इसका सारा दोष एक्टर्स के हाई-मेंटेनेंस सेटअप और उनकी मांगों को देना चाहिए। अनुराग ने यहां तक कहा कि फिल्मों के प्रोडक्शन बजट पर इतना खर्च नहीं हो रहा जितना स्टार्स की डिमांड पूरी करने पर हो रहा है। अनुराग कश्यप ने कहा, मैंने अपने सेट पर कभी इतनी वैनिटी वैन्स नहीं देखीं जैसी सेक्रेड गेम्स के वक्त थीं। ये कल्चर ऐसे शुरू हुआ। फिर आप इससे वापस नहीं जा सकते। आखिरकार, उन लोगों को पैसे दिए जाने लगे, जिन्हें पहले पूरी तरह इग्नोर किया जाता था, वो है टेक्नीकल क्रू। एक तरह से ये सभी भी है। लेकिन बहुत सारी एक्स्ट्रा चीजें आने लगीं। पिछले कुछ समय में फ्लॉप हुईं बड़े बजट की फिल्मों के बारे में बात करते हुए अनुराग ने कहा, अब लोग सिर्फ फिल्मों पर खर्च नहीं कर रहे। लोगों को एक बात समझनी होगी कि जब हम एक फिल्म बनाते हैं, हम काम कर रहे हैं, कुछ क्रिएट कर रहे हैं। ये कोई हॉलिडे नहीं है, ये पिकनिक नहीं है। बहुत सारा पैसा जो खर्च होता है, वो फिल्म बनाने में नहीं जाता। वो सब बाहरी चीजों में खर्च हो जाता है, एक्टर्स के तामझाम में चला जाता है। आप एक जंगल के बीच शूट कर रहे हैं, लेकिन एक कार को तीन घंटे दूर भेजा जाएगा सिर्फ आपके लिए वो 5-स्टार बर्गर लाने जो आपको चाहिए। अनुराग कश्यप ने हाल ही में अपनी नई फिल्म अनाउंस की है, जिसमें कई बड़े एक्टर्स काम कर रहे हैं। मलयालम एक्टर जोजू जॉर्ज इस फिल्म से हिंदी डेब्यू करने जा रहे हैं।

इस देश में जींस पहनने पर है बैन, मिलती है सजा

पहनावे को लेकर दुनियाभर में कई अंतर देखने को मिलते हैं। कहीं पर लोग पारंपरिक पोशाके पहनते हैं। ज्यादातर देशोकं में पुरुषों का पहनावा एक जैसा ही होता है। वहीं अमीर से लेकर गरीब तक सभी लोगों में जींस काफी पॉपुलर है। लेकिन क्या आपको पता है कि एक जगह ऐसी भी है जहां जींस पहनने पर बैन लगा हुआ है। इस देश में लोग जींस चाहकर भी नहीं पहन सकते हैं। जानते हैं कि यहां जींस पहनने पर बैन क्यों लगा हुआ है। दरअसल, एक देश ऐसा है जहां हर तरह की जींस पहनने पर बैन है। इस देश का नाम है उत्तर कोरिया। बता दें कि अजीबोगरीब कानूनों को लेकर उत्तर कोरिया पहले से ही काफी बदनाम है। आपको जानकर हैरानी होगी कि उत्तर कोरिया में लोग जीन्स नहीं पहन सकते। यहां जीन्स पहनने पर सजा मिलती है।

दरअसल, उत्तर कोरिया में नीली जींस, या जींस अमेरिकी साम्राज्यवाद का प्रतीक मानी जाती है। दरअसल, उत्तर कोरिया, अमेरिका को अपना कट्टर दुश्मन मानता है। ऐसे में जीन्स पहनने पर बैन लगाकर पश्चिम और अमेरिका के खिलाफ की गई कार्यवाही माना जाता है। वहीं उत्तर कोरिया ने साल 2009 में स्वीडन को जींस निर्यात करने की योजना बनाई थी, ताकि वहां के पब डिपार्टमेंट स्टोर इसे नोको ब्रांड के नाम से बेच सकें। लेकिन दुनिया भर में इसका विरोध इतना हुआ कि यह योजना खटाई में पड़ गई। खास बात यह है कि कई लोग मानते है कि उत्तर कोरिया में जींस बनाने की इजाजत तो है, लेकिन उन्हें पहनने की नहीं है। लेकिन यहां के अंदर की सारी जानकारी पूरी तरह से नियंत्रित होती है। बाहरी दुनिया तक पहुंचने वाली कोई भी जानकारी भी अधूरी हो सकती है। क्योंकि कोई भी इसकी पुष्टि करने की स्थिति में नहीं है। लेकिन प्रचलित जानकारी यही मानी जाती है कि उत्तर कोरिया में जींस पहनने पर पाबंद है।

अजब-गजब | जॉन ली को हत्या के जुर्म में सुनाई गई थी फांसी की सजा

इस शख्स को तीन बार लटकाया गया फांसी पर, हर बार बच गया

दुनिया में जब किसी गुनहगार को सजा ए मौत दी जाती है तो उसका मरना निश्चित माना जाता है। फांसी की सजा सुनते ही गुनहगार की सांसे तेजी से चलने लगती है। उसे पता होता है कि उसका बचना अब नामुमकिन है। लेकिन क्या आपको पता है कि एक शख्स को एक बार नहीं बल्कि तीन बार फांसी पर लटकाया गया लेकिन वह हर बार बच गया। हम बात कर रहे हैं जॉ ली की। जॉन ली को हत्या के जुर्म में फांसी की सजा सुनाई गई थी। उसे तीन बार फांसी पर लटकाया गया लेकिन उसकी मौत नहीं हुई।

दरअसल, जॉन ली नाम का एक शख्स एक अमीर महिला के घर में नौकरी करता था। एक दिन महिला के घर में चोरी हो गई। इसके बाद महिला ने जॉन ली को नौकरी से निकाल दिया। 15 नवंबर 1884 को इंग्लैंड के एक छोटे से गांव में जॉन को एक महिला के कत्ल के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि जॉन ली खुद को बेकसूर बता रहे थे लेकिन सबूत उनके खिलाफ थे। ऐसे में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

मौका ए वारदात जॉन ली के अलावा और कोई

नहीं था। साथ ही उनके हाथों पर कट के निशान भी लगे थे, जो इसी ओर इशारा कर रहे थे कि कत्ल जॉन ली ने ही किया है। ऐसे में ब्रिटिश पुलिस ने ज्यादा दिमाग और समय ना लगाते हुए जॉन को ही गुनाहगार समझकर कोर्ट में केस शुरू कर दिया। कोर्ट ने जॉन ली को मौत की सजा सुनाई।

23 फरवरी 1885 को जॉन ली को फांसी के फंदे तक ले जाया गया। जल्लाद ने उसे फांसी देने के लिए हैण्डल खींचा, लेकिन हैरानी की बात यह रही कि जॉन के नीचे मौजूद लकड़ी का दरवाजा खुला ही नहीं। जल्लाद ने कई बार हैण्डल खींचा, लेकिन दरवाजा नहीं खुला और जॉन फांसी से बच गया। इसके बाद दूसरे दिन फिर से उसे फांसी देने के लिए लाया गया लेकिन दूसरे दिन भी दरवाजा नहीं खुला। ऐसा तीन बार हुआ। तीन बार जॉन ली को फांसी पर लटकाया गया लेकिन फांसी नहीं लग पाई।

इसके बाद यह मामला हाई अथोरिटी के पास पहुंचा। जांच शुरू हुई कि आखिर फांसी की सजा तीन बार कैसे रुक सकती है। जांच में पता चला कि एक लोहे के टुकड़े की वजह से दरवाजा पूरी तरह से जाम हुआ पड़ा था इसीलिए वो खुल नहीं रहा था। इसके बाद लोगों को यही लगा कि जॉन को भगवान पर भरोसा था और भगवान ने ही उसकी मदद की है। इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार ने जॉन की सजा माफ कर दी थी। कोर्ट का कहना था कि जॉन ने तीन बार मौत की सजा को महसूस किया है और इतनी सजा उसके लिए काफी है।

ईवीएम से मेरी कोई पर्सनल लड़ाई नहीं : दिग्विजय सिंह

» बोले- सिर्फ हमारा वोट हमारे हाथ में होना चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। ईवीएम पर सबसे ज्यादा सवाल उठाने वाले मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के विचार अचानक बदल गए हैं। लोकसभा चुनाव 2024 के एग्जिट पोल आने के बाद दिग्विजय सिंह ने ईवीएम पर सवाल खड़े किए थे। अब जब लोकसभा चुनाव के परिणाम आ गए हैं तो दिग्विजय सिंह का सुर बदल गया है। दिग्विजय सिंह ने देशभर में इंडिया गठबंधन के पक्ष में आए परिणामों को लेकर कहा कि अगर ईवीएम के साथ छेड़छाड़ की जाती तो उत्तर प्रदेश में यह नतीजे सामने नहीं आते। उन्होंने आगे कहा कि हमारी ईवीएम से कोई पर्सनल लड़ाई नहीं है। हमार मतलब इतना है कि हमें सिर्फ हमारा वोट हमारे हाथ में दे दो, क्योंकि हमें सॉफ्टवेयर पर भरोसा नहीं है।

इस लोकसभा चुनाव में दिग्विजय सिंह के साथ एमपी कांग्रेस के सभी दिग्गजों को बुरी हार का सामना करना पड़ा है। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव से पहले दिग्विजय सिंह ने चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया था, लेकिन कांग्रेस ने उन्हें राजगढ़ लोकसभा से प्रत्याशी बना दिया। प्रत्याशी बनने के बाद दिग्विजय सिंह ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान जनता से एक भावुक अपील की थी। उन्होंने कहा था कि यह चुनाव उनका आखिरी चुनाव है। हालांकि दिग्विजय सिंह ने कहा कि मैं अब तक ईवीएम के खिलाफ लड़ता आया हूं, आगे भी लड़ता रहूंगा। जब तक हिम्मत है मैं इसके खिलाफ हमेशा लड़ता रहूंगा। दिग्विजय सिंह ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है। भाजपा 400 पार का दम भरती थी, लेकिन 300 भी पार नहीं हो पाई। इतना जरूर है कि नरेन्द्र मोदी पीएम नहीं रहेंगे। अयोध्या सीट को लेकर उन्होंने कहा कि अयोध्या की सीट भी भाजपा हार गई। यह शुभ संकेत है। इन्होंने हिंदू-मुसलमान किया, इसलिए लोगों ने इन्हें पसंद नहीं किया।

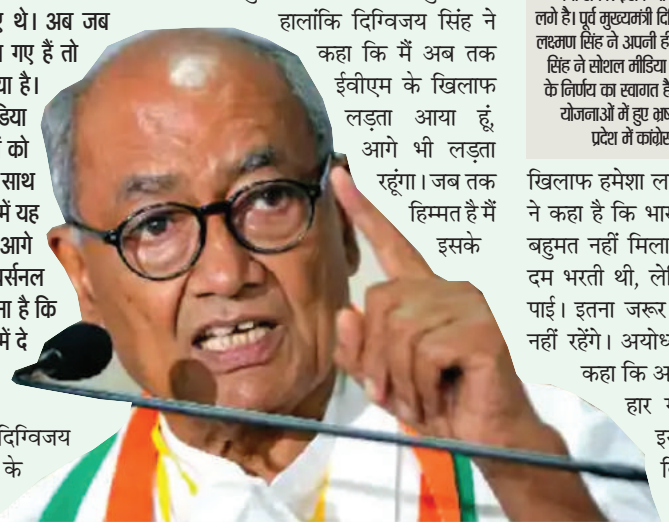

मध्य प्रदेश में कांग्रेस क, ख, ग, घ से शुरू करनी पड़ेगी : लक्ष्मण

लोस चुनाव के परिणाम आ गए है। देश में एनडीए को बहुमत मिला है। भाजपा सबसे ज्यादा सीट जीतकर बड़ी पार्टी बनी है। मध्य प्रदेश में भाजपा ने क्लीन स्वीप किया है। यहां पर भाजपा ने 29 में से 29 सीटें जीती है। कांग्रेस छिंदवाड़ा सीट भी नहीं बचा सकी। इसके बाद अब कांग्रेस के अंदर ही सवाल उठने लगे है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के भाई और कांग्रेस नेता लक्ष्मण सिंह ने अपनी ही पार्टी पर सवाल खड़े किए है। लक्ष्मण सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा कि सभी देश के मतदाताओं के निर्णय का स्वागत है। प्रजातंत्र मजबूत हुआ है। मोदीजी की योजनाओं में हुए भ्रष्टाचार का नतीजा उन्होंने भोगा। मध्य प्रदेश में कांग्रेस क ,ख, ग ,घ से शुरू करनी पड़ेगी।

चुनावी हार एक सामूहिक जिम्मेदारी: एकनाथ शिंदे

» बोले- फडणवीस से इस्तीफे पर करूंगा बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। डिप्टी सीएम देवेन्द्र फडणवीस ने चुनावी नतीजों के बाद इस्तीफे की पेशकश की है। महाराष्ट्र में एनडीए के खराब प्रदर्शन की उन्होंने जिम्मेदारी ली है। फडणवीस के इस्तीफे की पेशकश पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि चुनावी हार एक सामूहिक जिम्मेदारी है। चुनाव में तीनों पार्टियों ने मिलकर काम किया था। वोट शेयर पर नजर डालें तो मुंबई में महायुति को दो लाख से ज्यादा वोट मिले। हार के कारणों की ईमानदारी से समीक्षा की जायेगी। पिछले दो वर्षों में सरकार ने प्रदेश में कई अच्छे फैसले लिये हैं।

शिंदे ने कहा कि मैं जल्द ही देवेन्द्र जी से बात करूंगा। हमने पहले भी साथ काम किया है और हम भविष्य में भी काम करते रहेंगे। हम विपक्ष के झूठे दावों का मुकाबला करने में सामूहिक रूप से विफल रहे हैं। राज्य मंत्री गिरीश महाजन ने कहा कि उन्होंने सिर्फ महाराष्ट्र में सीटें घटने की जिम्मेदारी ली, बाकी कोई चर्चा नहीं की. वह सरकार में भी रहेंगे और संगठन के साथ भी काम करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारे पास 200 से ज्यादा विधायक हैं, उनके इस्तीफे या सरकार में किसी समस्या का कोई सवाल ही नहीं है। महाराष्ट्र में भाजपा की हार की जिम्मेदारी लेते हुए उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बुधवार को कहा कि वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेतृत्व से उन्हें सरकार के कर्तव्यों से मुक्त करने का अनुरोध करेंगे।

अगले विस चुनाव पर ध्यान केंद्रित करूंगा : फडणवीस

फडणवीस ने मुंबई में भाजपा मुख्यालय में कहा कि मैं महाराष्ट्र में भाजपा की हार की पूरी जिम्मेदारी लेता हूं। हम कुछ जगहों पर पिछड़ गए और महाराष्ट्र में खराब प्रदर्शन मेरी गलती है।" फडणवीस ने कहा कि अगले विधानसभा चुनाव पर ध्यान केंद्रित करने और गलतियों को सुधारने के लिए मैं पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से मुझे सरकार के कर्तव्यों से मुक्त करने का अनुरोध करता हूं। मैं अपने वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात करूंगा और उन्हें अपनी अपेक्षाओं के बारे में बताऊंगा।

बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की दौड़ में शिवराज भी शामिल

» कांग्रेस ने बताया- पीएम पद का दावेदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। लोकसभा चुनावों के नतीजों के बाद भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने सरकार बनाने की कवायद तेज कर दी है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत सभी नवनिर्वाचित सांसदों को दिल्ली तलब किया गया है। इस बीच अटकलें हैं कि शिवराज को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई कैबिनेट में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का कार्यकाल भी 30 जून को खत्म होने वाला है।

इस वजह से शिवराज को अध्यक्ष बनाने की अटकलें भी तेज हो गई हैं। भले ही भाजपा को अपने दम पर बहुमत न मिला हो, भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को स्पष्ट बहुमत मिल चुका है। इस वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार एनडीए सरकार बनने का रास्ता भी साफ हो गया है। सरकार बनाने की तैयारियों के बीच भाजपा ने अपने सभी नवनिर्वाचित सांसदों को दिल्ली तलब किया है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी दिल्ली के लिए रवाना होने वाले हैं।

मुसलमानों ने इंडिया को किया एकतरफा मतदान : सलमान खुर्शीद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद ने चुनाव परिणामों को लेकर आज एक बड़ा दावा किया है। खुर्शीद ने कहा कि मुसलमानों ने इस बार एक तरफा इंडिया गठबंधन को वोट किया है। खुर्शीद ने कहा कि मैं चाहता हूं कि देश में इंडिया गठबंधन की सरकार बने। चुनावों में मुसलमानों ने इस बार एक तरफा इंडिया गठबंधन को वोट किया है, इंडिया गठबंधन की भी जिम्मेदारी है कि वह इस बात को समझे और अनदेखी नहीं करे। बसपा प्रमुख मायावती का भविष्य के चुनावों में मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट नहीं देने के सवाल पर खुर्शीद ने कहा कि बसपा प्रमुख कह रही हैं कि मुसलमानों को टिकट नहीं देंगी, मत दें।

लेकिन ये भी सोचें की दलितों ने मायावती को क्यों वोट नहीं दिया। सलमान खुर्शीद ने कहा कि मैं चाहता हूं कि इंडिया गठबंधन की सरकार बने, कांग्रेस की सरकार बने, हमारे नेता आज शाम को ये सब मीटिंग में तय करेंगे। इंडियन मुस्लिम फॉर सिविल राइट्स (आईएमसीआर) द्वारा आयोजित प्रेस वार्ता में पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद के अलावा योजना आयोग की पूर्व सदस्य सैयदा सैयदेन हमीद, आईएमसीआर के अध्यक्ष, मोहम्मद अदीब और सीनियर एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट फुजैल अयूबी, आईएमसीआर के राष्ट्रीय संगठन महासचिव, डॉक्टर आजम बैग मौजूद थे।

मतदाताओं की जागरूकता और एकजुटता दिखी

उन्होंने कहा कि मतदाताओं की जागरूकता और एकजुटता ने भारत को मोदी लहर को खत्म करने में मदद की है। आज आम मतदाता का लोकतंत्र में विश्वास और संविधान को बचाने की उनकी आकांक्षाएं कम नहीं हुई हैं। इस चुनाव ने आम मतदाता के संविधान और भारतीय लोकतंत्र में विश्वास की पुष्टि की है। खास तौर पर मुस्लिम मतदाता, जिनकी अक्सर धार्मिक आधार पर मतदान करने के लिए आलोचना की जाती है। उन्होंने धार्मिक संबद्धता से परे लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए भारतीय उम्मीदवारों का समर्थन करने के लिए बड़ी संख्या में मतदान किया है।

टी-20 वर्ल्डकप में भारत का जीत से आगाज

» पहले मैच में आयरलैंड को 8 विकेट से रौंदा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

न्यूयार्क। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में विजयी आगाज करके भारतीय टीम ग्रुप ए में टॉप पर काबिज हो गई है। भारत ने आयरलैंड को 8 विकेट से हरा दिया है। न्यूयॉर्क के नासाउ स्टेडियम में 97 रन का लक्ष्य 12.2 ओवर में भारत ने दो विकेट गंवाकर आसानी से हासिल कर लिया। कप्तान रोहित शर्मा ने अर्धशतक जमाया। उन्होंने 37 गेंदों में 4 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 52 रन की पारी खेली। रोहित रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटे। वहीं विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने 26 गेंदों में नाबाद 36 रन बनाए। उन्होंने 3 चौके और 2 छक्के ठोके। पंत ने विजयी छक्का लगाया। सूर्यकुमार यादव ने दो और विराट कोहली महज 1 रन बनाकर आउट हुए।

इससे पहले, आयरलैंड टीम 16 ओवर में 96 रन पर ही सिमट गई। भारतीय गेंदबाजों ने कमाल का प्रदर्शन किया। भारत के लिए हार्दिक पंड्या ने सबसे ज्यादा तीन विकेट चटकाए। अर्शदीप सिंह और जसप्रीत बुमराह को दो-दो विकेट मिले। मोहम्मद सिराज और अक्षर पटेल को एक-एक विकेट मिले। आयरलैंड के लिए सबसे ज्यादा रन गैरेथ डेलानी ने 14 गेंदों में 26 रन बनाए। हालांकि, आयरलैंड की खराब शुरुआत रही और उसके बाद तो टीम उबर ही नहीं पाई।

रोहित ने 600 इंटरनेशनल सिक्स का बनाया नया वर्ल्ड रिकॉर्ड

इस दौरान भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने सिक्सर किंग का नया लेवल छू लिया। उन्होंने अपनी पारी के दौरान 600 इंटरनेशनल सिक्स कंप्लीट किए और एक रिकॉर्ड बना दिया। वह इंटरनेशनल क्रिकेट में 600 सिक्स जड़ने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। उन्हें ये आंकड़ा छूने में महज 3 सिक्स की दरकार थी। भारतीय टीम के हिटमैन के भारत और आयरलैंड टी20 वर्ल्ड कप 2024 मैच में अर्धशतकीय पारी खेली। उन्होंने 37 गेंदों में चार चौकों और तीन छक्कों के दम पर 52 रन बनाए। वह रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटे। रोहित के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा सिक्स लगाने का कारनामा यूनिवर्स बॉस यानी क्रिस गेल ने किया है। पूर्व वेस्टइंडी दिग्गज ने अपने करियर में 553 सिक्स उड़ाए। उनके बाद इस लिस्ट में पाकिस्तान के पूर्व ऑलराउंडर शाहिद अफरीदी हैं। जिनके बल्ले से 476 छक्के निकले। न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर ब्रैंडन मैकुलम मार्टिन गुप्टिल (383) क्रमशः चौथे और पांचवें नंबर पर हैं।

उत्तर प्रदेश की जागरूक जनता पर नाज : प्रियंका

» बोलीं- कार्यकर्ताओं ने धूप और धूल में की कड़ी मेहनत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में अपनी पार्टी के प्रदर्शन के लिए जनता और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि अवाम ने आज की राजनीति में एक पुराना आदर्श फिर से स्थापित किया है।

प्रियंका ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किए गए संदेश में कहा, उप्र कांग्रेस के मेरे सभी साथियों को मेरा सलाम। मैंने आपको धूप और धूल में कड़ी मेहनत करते हुए देखा, आप झुके नहीं, आप रुके नहीं, कठिन से कठिन दौर में आपने लड़ने की हिम्मत दिखाई। आपको प्रताड़ित किया गया, आप पर फर्जी मुक़दमे लगाये गये, जेल में डाला गया, बार-बार नज़रबंद किया गया, मगर आप डरे नहीं। कई नेता डर के चले गये, आप टिके रहे। उन्होंने इसी संदेश में कहा, मुझे गर्व है आप पर और उत्तर प्रदेश की जागरूक जनता पर, जिसने इस देश की गहराई और सच्चाई को समझा और हमारे संविधान को बचाने का ठोस संदेश पूरे भारत को दिया। कांग्रेस ने पिछले दिनों संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में 17 सीट पर चुनाव लड़ा था जिनमें से उसे छह सीट पर कामयाबी मिली जबकि 11 पर वह दूसरे स्थान पर रही। वर्ष 2019 में हुए पिछले लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में मात्र एक सीट जीतने वाली कांग्रेस के लिए इस बार के नतीजे बड़ी कामयाबी के तौर पर देखे जा रहे हैं।

राजनीति में पुराना आदर्श फिर से स्थापित

कांग्रेस महासचिव ने कहा, आपने आज की राजनीति में एक पुराना आदर्श फिर से स्थापित किया है कि जनता के मुद्दे सर्वोपरि हैं, इनको नकारने की क़ीमत भारी होती है। चुनाव जनता का है, जनता ही लड़ती है, जनता ही जीतती है।

पूरे देश में गठबंधन एकजुट होकर चुनाव लड़ा : राहुल

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के बेहतरीन प्रदर्शन से गदगद पूर्व पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि इंडिया गठबंधन ने यह चुनाव भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ लड़ने के साथ-साथ ईडी, सीबीआई और इंटेलीजेंस समेत तमाम एजेंसियों के खिलाफ लड़ा है क्योंकि यह सभी संस्थाओं पर बीजेपी को चुनाव जिताने का दबाव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने बनाया था। इसके अलावा गांधी ने मीडिया पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उनकी भावनाएं भी बीजेपी की सरकार के साथ जुड़ी हुई हैं। संविधान की कॉपी दिखाते हुए उन्होंने कहा कि यह लड़ाई संविधान और लोकतंत्र को बचाने की थी। जिसे देश की आम जनता ने बखूबी अंजाम दिया है, जिसके लिए गाँधी ने देश की जनता को धन्यवाद दिया। राहुल गांधी ने दावा किया कि पूरे देश में गठबंधन एकजुट होकर चुनाव लड़ा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में देश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत न देकर बता दिया है कि लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की देश में सरकार नहीं चाहते हैं।

— · — प्यासी दिल्ली को सुप्रीम कोर्ट से राहत — · —

हिमाचल छोड़ेगा ज्यादा पानी हरियाणा नहीं करेगा मनमानी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली मे पानी के बढ़ते संकट पर सुप्रीम कोर्ट ने बड़ी राहत दी है। अदालत ने हिमाचल प्रदेश को दिल्ली के लिए 137 क्यूसेक पानी छोड़ने का आदेश दिया है। अदालत ने हरियाणा से कहा है कि वह दिल्ली में पानी पहुंचने की राह में रोड़ा न बने, बल्कि पानी पहुंचाने में पूरा सहयोग करे। हरियाणा सरकार की दलीलें खारिज करते हुए अदालत ने दिल्ली में बेरोकटोक पानी पहुंचाने की व्यवस्था करने का आदेश दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पानी की बर्बादी न हो, इस बात का भी ध्यान रखा जाए, साथ ही कोर्ट ने सोमवार तक स्टेटस रिपोर्ट मांगी है। दिल्ली में पानी के बढ़ते संकट को लेकर दिल्ली सरकार की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में आज सुनवाई हुई। जस्टिस प्रशांत मिश्रा और जस्टिस के वी विश्वनाथन की बेंच ने सुनवाई की।इस दौरान दिल्ली सरकार के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि अपर रिवर बोर्ड की राज्यों के साथ मीटिंग हुई, हिमाचल पानी देने को तैयार है, लेकिन हरियाणा आपत्ति जता रहा है।

फोटो :4 पीएम

धरना हुसैनगंज स्थित पुलिस भर्ती बोर्ड पर प्रदर्शन करने आए पुलिस रेडियो ऑपरेटर भर्ती अभ्यर्थी।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कार्ति चिदंबरम को जमानत

राउज एवेन्यू कोर्ट ने दिया आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। चीनी वीजा घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कार्ति चिदंबरम को साधारण जमानत मिल गई है। यह आदेश दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने दिया है। ईडी ने 2011 में 263 चीनी नागरिकों को वीजा जारी करने से संबंधित कथित घोटाले में मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया है।

मामले में कार्ति चिदंबरम के अलावा 3 अन्य लोगों को ईडी ने आरोपी बनाया था। उस समय कार्ति के पिता पी. चिदंबरम केंद्रीय गृह मंत्री थे। मामले में सीबीआई के मामला दर्ज करने के बाद प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग के तहत भी केस दर्ज किया गया था। सीबीआई के मुताबिक इस मामले मे करीब 50 लाख रुपये की रिश्वत ली गई थी।

नैनीताल में दर्दनाक हादसा, सात की मौत

» भाइयों से छिना मां-बाप का साया, बहन ने भी साथ छोड़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नैनीताल। सिसौना सितारगंज से गर्मियों की छुट्टी मनाने भदकोट जा रहे छह सदस्यीय परिवार के तीन सदस्यों की मौत हो गई। तीन भाइयों के सिर से मां-बाप का साया उठ गया। घायल तीनों बच्चों का एसटीएच में इलाज चल रहा है।

मूलरूप से भदकोट निवासी महेश चंद्र परगाई (40) सिडकुल में नौकरी करते थे। वह सिसौना सितारगंज में छह सदस्यीय परिवार के साथ रहते थे। बच्चों के स्कूल की छुट्टी पड़ी तो उनकी पत्नी पार्वती (34) ने परिवार के साथ भदकोट जाने का प्लान बनाया। बुधवार को दपंती अपने चार बच्चों के साथ सितारगंज से बस से हल्द्वानी आए। यहां से मैक्स वाहन में बैठकर भदकोट के लिए रवाना हो गए। खनस्यू बाजार से आगे मैक्स खाई में गिर गई। इस हादसे में महेश चंद्र परगाई (40), पार्वती परगाई (34) और पुत्री कविता परगाई (10) की मौके पर ही मौत हो गई। उधर इनके तीन बेटे पंकज परगाई (12), मनोज परगाई (10) और लोकेश परगाई समेत सात घायल हो गए। देर रात सभी घायलों को सुशीला तिवारी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

12 जून को थी बेटी की शादी लेने आए थे शादी का सामान

पश्या गांव निवासी कृष्णा नंद कुड़ाई की बेटी की शादी 12 जून को है। वह बेटी के शादी का सामान लेने के लिए खनस्यू बाजार आए थे। कृष्णा नंद ने बताया कि वह बाजार से मैक्स वाहन में बैठे। गाड़ी जैसे ही दो किलोमीटर दूर पहुंची तो सीधी सड़क पर खाई में जा गिरी। बताया कि बाजार से उन्होंने 12 हजार रुपये का सामान खरीदा था। अब उन्हें बेटी की शादी की चिंता सता रही है कि बेटी की शादी तक वह ठीक हो पाएंगे या नहीं।

सुबह-सुबह बदला मौसम, आंधी के साथ हुई बारिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी के अवध और पूर्वांचल क्षेत्र का मौसम बृहस्पतिवार की सुबह से बदल गया। लोगों को तपिश और लू से राहत मिली। लखनऊ और उसके आसपास से सटे जिलों में आंधी के साथ बारिश हुई। लखनऊ में 60 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से चली हवाओं से जन-जीवन प्रभावित हुआ। इससे बिजली की समस्याएं भी हुईं। राजधानी लखनऊ समेत प्रदेश के कई इलाकों में सुबह से ही आंधी चलनी शुरू हुई। आंधी के साथ बारिश भी हुई।

मौसम विभाग के मुताबिक लखनऊ में तो कहीं कहीं 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तो कहीं इससे भी तेज गति से आंधी चली। बुलंदशहर, सुल्तानपुर, गाजीपुर, गोरखपुर समेत पूर्वांचल के कई जिलों में बारिश हुई। लखनऊ में गोमतीनगर, हजरतगंज में केडी सिंह बाबू स्टेडियम सहित कई इलाकों में पेड़ गिरे, जिससे बिजली भी प्रभावित हुई। तार टूटने की वजह से शहर में कई बिजली फॉल्ट हुए।

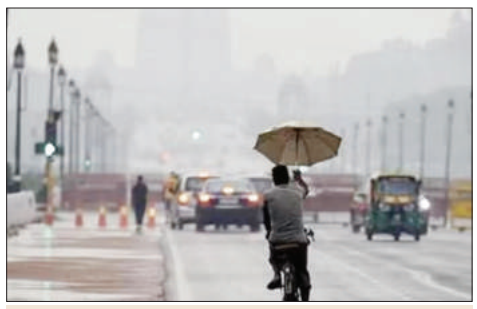

गर्मी से मिली राहत

अयोध्या में मौसम का मिजाज अचानक बदल गया। सुबह करीब आधे घंटे तक आंधी चलने के बाद बारिश शुरू हो गई। एक घंटे तक हुई बारिश के चलते उमस भरी गर्मी से निजात मिल गई। बारिश थमने के बाद भी मौसम सुहाना बना रहा है। बृहस्पतिवार को भोर में 3:30 बजे के करीब अचानक आंधी चलने लगी। इस वक्त ज्यादातर लोग अपने घरों में सो रहे थे। करीब आधे घंटे तक आंधी चलती रही। इसी के साथ चार बजे के करीब बारिश शुरू हो गई। शहर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक एक घंटे बारिश हुई। पांच बजे के करीब बारिश थम गई। इसके बाद से मौसम का मिजाज सुहाना बना रहा। लोग जब सुबह सोकर उठे तो उन्हें उमस भरी गर्मी से काफी हद तक राहत मिली।

पूर्वी भारत में अभी पांच दिन जारी रहेगी लू, ओडिशा में अब तक 36 लोगों की मौत

देश के पूर्वी हिस्से, उत्तर प्रदेश और उत्तरी मध्य प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में अगले पांच दिनों तक लू की स्थिति जारी रह सकती है। उधर, ओडिशा में भीषण गर्मी के चलते अब तक 36 लोगों की जान चली गई। बुधवार को जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी के साथ बारिश हुई। राष्ट्रीय राजधानी और आसपास के कुछ इलाकों में हल्की बारिश हुई। प्रचंड गर्मी के बाद उत्तर पश्चिम भारत में कुछ स्थानों पर अब अगले दो दिन आंधी-तूफान के साथ बारिश की संभावना है। कहीं-कहीं जोरदार बारिश हो सकती है।

हिमाचल में चोटियों पर भारी बर्फबारी, बारिश

हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में यलो अलर्ट के बीच बुधवार को लाहौल-स्पीति और चंबा की चोटियों पर भारी बर्फबारी हुई। शिमला समेत प्रदेश के कुछ जिलों किन्नौर, कुल्लू, चंबा, सोलन और कांगड़ा के कई क्षेत्रों में बादल झमाझम बरसे। जिला कु ल्लू के दलाश, कांगड़ा के पालमपुर और बैजनाथ में भारी ओलावृष्टि हुई। प्रदेश में मौसम बदलते ही गर्मी से कुछ राहत मिली है। हालांकि बारिश के बाद मैदानी जिलों में उमस बढ़ गई है। दिन में धूप खिली रहने से मंडी में लू चली।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in
RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।